



वर्ष ८ : कांठ ८६ : अंक २

प्री
यी
म
न
ला
ल
जी॥
क
ह
द
स
शी॥
ह

॥ अहम् ॥

अखिल भारतवर्षीय जैन श्रेताम्बर मूर्तिपूजक मुनिसम्मेलन संस्थापित
श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समितिनुं मासिक मुख्यपत्र

श्री जैन सत्य प्रकाश

वर्ष ८	विक्रम सं. १५५६ : वारनि. सं. २४६६ : धस्तीसन १५४२	क्रमांक
अंक २	कार्तिक शुहि ८ : २० विवाह : नवेम्बर १५	८६

विषय - दर्शन

१ श्रीसाधारण जिन स्तवनम्	: पू. आ. म. विजयक्षमाभद्रसूरिजी	: ४१
२ भटेवा पार्थनाथनी उत्पत्तिनुं रत्वन	: श्रा. लोगीकाल ज. साडेसरा	: ४२
३ श्रीइश्वर्द्धि पार्थनाथज्ञो छंद	: श्रा. साराभाई भ. नवाय	: ४३
४ प्रतिज्ञा-पादन (कथा)	: पू. सु. म. श्री. सुशीलविजयजी	: ४४
५ सागरगच्छीय साधुओंकी उपस्थापना-दिनावली	: पू. पं. म. श्री. कल्याणविजयजी गणि	: ४४
६ पंचपरमेष्ठिनभस्त्रार्नो प्रभाव आने		
७ देव नदी	: पू. सु. म. श्री. उद्रिक्षविजयजी	: ४५
८ प्रवयन-प्रश्नमाला	: पू. आ. म. श्री. विजयामृतसूरिजी	: ४५
९ अरिहंत-चैत्य' शब्दका अर्थ	: पू. सु. म. श्री. विक्रमविजयजी	: ४६
१० लैनधर्मी वारेनां पराक्रम	: श्रा. मोहनलाल हीपयंद चोकरी	: १०
१० आमार अने विनाटी	:	: १२० नी सामे

सूचना-आ मासिक अंग्रेज महिनानी पंद्रभी तारीखे प्रगट थाय छे.
तेथा सरनामाना ऐराहना भर आमी तारीखे समितिना कार्यालये
पडेंयाइवा.

लक्ष्मण-वार्षिक-ऐ इषिया : ८०२५ चालु अंक-वाणु आना

भुद्र६ : नरेतम ६. पंड्या; प्रकाशक : श्रीमनकाल गोपालदास शास; प्रकाशनस्थान
श्री लैनधर्म सत्यप्रगत्यक समिति कार्यालय लेशंगलाईनी वाडी, धीकांठा रोड, अमदाबाद,
भुद्रणस्थन : सुभाष प्रिन्टरी, भारतपुर रोड, अमदाबाद

॥ शीराय नित्यं नमः ॥



श्री जैन सत्वराय प्रकाश

१५८

डभांक ८६

अंक २

(संभवतः श्रीमुनिसुन्दरसूरिविरचितम्)

साधारणजिन-स्तवम्

संग्राहक—

पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयक्षमाभद्रसूरिजी

जय श्रीजिन ! कल्याणवल्लीपल्लवनाम्बुद ! ।

मुनीन्द्रहृदयाम्भोजविलासवरपूपदः ॥ १ ॥

तव नाथ ! पदद्वन्द्वसपर्यारसिका जनाः ।

सर्वसम्पत्सुखश्रीभिर्विलसन्ति सदोदयाः ॥ २ ॥

नुलोके चक्रिताव्यायाः सुरलोके चेन्द्रतादयः ।

शिवेऽनन्तमुखाव्यास्ताः तव भक्तिवशाः श्रियः ॥ ३ ॥

सर्वश्रियः श्रियां मूलं दधदर्थं समग्रवित् ।

योगक्षमंको नाथ ! त्वमेव जगतामसि ॥ ४ ॥

त्वमेव शरणं बन्धुः त्वमेव मम देवता ।

तन्मां पाहि भवान् तात ! कुरु श्रेयः सुखास्पदम् ॥ ५ ॥

स्तुतिमिति तनुते जिनेन्द्र ! यस्ते

मघवमहामुनिसुन्दरस्तुतांह्रेः ।

स भवतु(ति) गुणसम्पदा समस्ते

फलमिति तद्वितराचिरान्मम ॥ ६ ॥

इति श्रीमाधारणजिनस्तवनं सम्पूर्णतां प्राप । श्रीः श्रीः श्रीः ।

(ओंक ग्राचीन भरतविभित पानाभांशी उद्घृत)

मुनि भावरत्नकृत भटेवा पार्श्वनाथनी उत्पत्तिनुं स्तवन

संपादक-श्री लोगोलाल ज. सांडसरा, झी. ओ. ओनसे

विक्रमना अरादमां शतकना उत्तरार्धमां चह आपेला नेन इवि भावरत्ने सं. १९७० गां रवेलु याणुसमाना भटेवा पार्श्वनाथनी उत्पत्ति विंगेनु रत्वन द्वैत इतिहासनी इष्टिए उपरोक्ती नज्ञायाथी संपादित करीते अही आच्यु छे. अवगत, तेमां आपेली उत्तराक पितो अन्य औतिहासिक साधनो साथे मुद्रायां उत्तरां ओम ने ओम रामरवा नेना द्वागती नथी, तो पछ भिन्ने कांयाथी भगवानी नथी ओकी उत्तराक वरदुओ. पाणु ओमाथी भगे हे, ए रीते भने प्रस्तुत काच्य नोंद्याव लाग्यु हे.

पहेलां ओक पक्कित हेशानी अने पक्ती ओक डी इतिहासीतनी ओ प्रमाणि ११ हेशानी पक्कितज्जे. अने ११ इतिहासीतनी कीओमां आ काच्य लाग्यु हे. ओमां वल्लभीली पितो गुनु तुवनात्मक इष्टिए अवलोकन उत्तरां पहेलां ओनो द्वैत सार नोई लहज्जे. इवि कहे हे—

“श्रुतधरो कहे हे के छाड़र पामेना भादुअर गाममां सुखेवं ह नामे ओक गरीब वालियो रहेतो हतो. तेना वरमां डाई फुस्यना योंगे पार्श्वनाथनी प्रतिमा प्रगट थतां लदभीनी रेवमहेल थहि रही. उत्तराक वरपत पक्ती छाड़रना यागवनो आ बात ज्ञानां शेष पासे आ प्रतिमानी मागणी हरी अने न आपवामां अहो लागल्लरीथी लेवाती धमझी आपी. आथी शेषे ओ प्रतिमा गामने जांदरे ओक पक्कित तरमां जानेमाने हारी हाधी. प्रतिमा नहीं भगतां रागवे शेषेनु वर लुटी लीधु. आजु पाणु पार्श्व पासे आपेला चंद्रावती^१ गाममां शवियंह नामे ओक गरीब पछु पुण्यमुद्दि विषुक रहेतो अने भादु भरव्युं हींग देवाने पेट अन्ने हतो. अने ओदार यक्षे रवानामां आता भादुअर गामना जांदरे आपेला ऐतरमानी पार्श्वनाथनी प्रतिमा लहि आववानुं छाव्यु. सरारे जीहीते वहेल नेतीने शेषे ओ मूर्ति लहि आव्यो. ओक हिवल रवानामां हरी यक्षे छाव्यु के पार्श्वनाथनुं मंहिर अंधाव. अने शेषेने उत्तराक छाव्यु धन अनाव्यु. आ धनमांया शवियंह शेषे मंहिर अंधाव्यु अने सं. १५३५ नी अआवीने पार्श्वनाथनी प्रतिमा करावी.”

आ वृत्तांतमां आपेला यमतकार धृत्याहि पिये भोन धारणु करीजे तो पछु उत्तराक पितो नानी औतिहासिक मूर्त्यनो रवाकार उरवा पडेहो. काङ्कनी उत्तराक शेषमां कर्ता खोते ज छहे हे के:

“ छरणु तपने संयंध लेई संक्षेपमध्यं अध्येयी”

अर्थात् प्राचीन रत्वन उपरथी तेले आ वृत्तांत संक्षेपमां आपेया हे.

याणुसमामां लाल भटेवा पार्श्वनाथनुं मन्दिर छे तेनो अण्णाङ्कार सं. १८४२मां करवामां आच्यो हतो. ओटेले ओ भहेलां जूनुं मन्दिर हतुं ओम मानवाने संपूर्ण भारणु हे. लगभग पंहर-सोण वर्ष उपर पाया ज्ञातां तेमांथी पार्श्वनाथ लगवाननी मूर्ति नीकणी हती अने

१. हात लंदेया पार्श्वनाथ याणुसमामां के ते नेमन चाच्य साधनमहानी लाहकत ध्यानमां खेतां चंद्रावती^२ वटे कठोने “चाच्युस्मां” ल हित्रु हे, ओमां रांडा नथी. आजु आपेक्षु चंद्रावती पालेयथी वाणु हूर छ तेमन अहीं कठोन भाव्येन उत्तिष्ठ हाई रहे.

अंक २]

भटेवा पार्थिनाथनी उत्पत्तिनुँ स्तवन

[४३]

ते भाटे नहुँ नाहुँ मन्दिर छानि रथाधना करनामां आपानी हो, अतारे अहार गामधी वस्तु
लैतो चाणुरमाना 'भटेवा'नां दृश्यन करवा भाट आपे हो. 'भटेवा पार्थिनाथ' ऐनुँ नाम
पाइवानो झुवासो भुनि लावरलना आवमांथी भयो रहे हो, उभद इडर पासेना आहुआर
गामधी गो भूर्ति जडी होती.

परंतु चाणुरमानां भटेवा पार्थिनाथनुँ वर्ष भावरत्ने सं. १५३५-आप्युं
हो तेमां शका करवानुँ करण्यु भयो हो; भुनि श्री ज्यंतविजयज्ञाने 'ज्ञेनाचार्य' श्री आत्मानंहे
शतांही नमारक अंथंभां वीशा श्रीमाणा ज्ञानिना ऐक प्राचीन कुक्कनी वंशावणी ल्पावी हो.
ऐ वंशावणी वहीवंचाना चौपडा उपरथी लणापेली डोय एम जखाय हो, अने तेथी
ऐतिहासिक हण्ठिके वधु निवासपान हो. एमां जिनमात्रनिवासी वीशा श्रीमाणा ज्ञानिना
ऐक तोडाना वंशनी लगलग घ० पेटीआनो अने उउ पेटा शाखाओनो वृतांत आपेलो हो;
अने ते सं. ७४४६ शङ्क लग्यु हो (शतांही अन्थ ग्र. २०७)-

पूर्वी नदिमान भाई जयता उच्चारी चाहण्यामि वास्तव्यः सासरामांही तब श्रीभटेवा श्री-
पार्थिनाथचत्वं कारपितं सं. १३३५, वर्षे श्रीअंचलगणके श्रीअवजितसिंहसूपदेशने प्रतिष्ठितम्

अर्थात् वर्धमानना भाई ज्यतांते (नेत्री गामधी) उच्चाको लरीने गेताना साक्ष-
राना गाम चाणुरमानां वास कर्ती, त्यां तेणु श्री भटेवा पार्थिनाथनुँ मन्दिर अंधार्यु अने
अंगदगच्छीय अवितसिंहसूपदिना उपरेक्षथी सं. १३३५मां तेनी प्रतिष्ठा करावी.

मने गेताने आ वंशावणीमां आपेली साक वधारे विश्वासपात्र लागे हो, करण्यु हे
ऐनो आधार वहीवंचानी नोंध हो. वणी अंगदगच्छीय अवितसिंहसूपदिना आचार्यपदनुँ
वर्ष यं. १३१४ अने रवग्वासङ्क वर्ष सं. १३५८ हो, ऐटले पण्य वंशावणीमां आपेली
साक साथे ते सुसंगत हो. वणी वंशावणीमानी नोंधमधी भटेवा' ए नाम विषे कंध
झुवासो भगतो नथी, अने भटेवा पार्थिनाथनुँ चैत्य करायु, एम भोधम लग्यु हो, ते
उपरथी हु अनुमान करुँ छु हो सं. १३३५मां भटेवा पार्थिनाथना भूमि चैत्यनो झुण्डीक्कार
थेणो दशे, त्यारे धृष्ट भासेना आहुआर गामधी पार्थिनाथनी-'भटेवा'नी-भूर्ति वधारे
प्राचीन कागामां चाणुरमा लाववामां आपानी दशे. भावरलत्तुँ कान्य ए प्राचीनतर प्रसंगेना
उद्देश करतुँ नेहो ए. अवधत्तु एमां आपेलां नामो ऐतिहासिक हो, एम
मानवानुँ साहस हुँ नहीं करुँ. भावरत्ने सं. १५३५नुँ वर्ष आप्युं हो, ते सं. १३३५
पहिना द्वाध झुण्डीक्कारुँ होय अने वधारे विश्वसनीय ऐतिहासिक विगतोना अभावे
तेमणे ए वर्षने आ शीते गेतानी कृतिमां जोडी हायु होय. अथवा एम ने न भानीओ
तो 'करण्यु तव'. (प्राचीन स्तवन)ना सं. १३३५ने स्थाने तो तो 'करण्यु तव'नी कडव करावार
विद्वानी हे कविनी भूक्ती सं. १५३५ थर्द गयु लशे, एम अनुमान करतुँ नेहो.

गमे तेम, पण्य ऐक प्राचीन तीर्थश्थान विषे आ स्तवनमधी लवे घोडीक पाण
उपयोगी मालिती भयो हो. भटेवा पार्थिनाथ विषे इवि ऐक झुडुँ व स्तवन लाभवा प्रेराय
हो, ते पण्य ए तीर्थनुँ माहात्म्य सूचये हो. हैत धृतिहास उपरांत चाणुरमाना स्थानिक
धृतिहास माहे पण्य ए वर्षतु जाणवा नेवी गज्याय.

द्वे इवि विषे-स्तवनना अंत भागमां करेवा उद्देश उपरथी जखाय हो हे

[४४]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष ८]

आवरत्न पूर्णिमा गच्छना महिमप्रबलसूरिना शिष्य होता. तेमणे सं. १७६६मां चाणुन्मा पासेना उपभुर गाम्भ 'हरिअग माधीनो रास,' सं. १७६७मां पाठ्यमां 'सुखदासतीरास', सं. १७६८ मां पाठ्यमां 'भुद्धिविमवालतीरास,' सं. १७६९मां 'जांकरिया सुनिनी सज्जाय' तथा सं. १८०० मां 'अंगडरास' रच्या हो. आ उपरांत 'नववाड सज्जाय', 'अध्यात्मशुद्ध' तथा 'आपाइभृतिरत्वन' ए तेमनी नानी दृतिगो हो.^२

आज आवरत्न पर्णीयो आवप्रबलसूरि थया. तेमणे यशाविजयशृङ्खल 'अतिमाशतक' उपर संस्कृत दीक्षा सं. १७६८ना माध सुह अष्टमीने गुरुवारे पूर्णि करी हो. तेमनी प्रशंसित पाणु 'हरिअगरास'मां आपी तेज प्रमाणे लगभग हो. विशेषमां श्रीमाणा वीरवंशे शम्भुक्षिथी थरेव ज्यतसीना पुन तेजरही अणिहो वाणु द्रव्य अर्ची सूरिपद जेते अपाव्यु हो एवा आवप्रबलसूरिहो आ वृति पूर्णि करी, एम जाणुव्यु^३.

वणी आ आवरत्न अथवा आवप्रबलसूरिहो कालिदासकृत 'ज्ञेयातिर्विदालरणु' उपर 'सुखप्रेषिका' नामनी संस्कृत दीक्षा पाठ्यमां द्वेष्वाडामां पूर्णिमा गच्छना उपाश्यमां रहीने लभी हो. एमना पितानुं नाम मांडणु अने मातानुं नाम आधिका (५) दर्तु, एम ए दीक्षानी प्रशंसित उपरथी जाणुव्यु हो. आवरत्न संस्कृत भाषाना पाणु सारा विद्यान दता, एम आ उपरथी पुरवार थाय हो.

पाठ्यमां द्वेष्वाडामां आने पाणु पूर्णिमा गच्छना श्रीपूज्यनी ऐडक हो.

आवरत्नकृत भरेवा पार्श्वनाथनी उत्पत्ति विषेना आ उपयोगी औतिलासिक अव्यन्ती एक पानानी उस्तविभिन प्रत भने अगीआरेक वर्ष पर पाठ्यमां सहगत पू. प्रवर्तक श्री कान्तिविजयशृङ्खलाराज पासेयी भणी होती. ते उपरथी ता. ११-६-१८३१ने रोज में करेली नक्ल उपरथी आ सपाइन कर्यु हो. प्रतीनी पुणिप्रामां जाणुव्यु हो ते प्रमाणु सुनि आवरत्नना पोताना हुस्ताक्षरमां ज आ काठ्य लांचायु छार्क तेनी वाचना, पुणिप्रामो ज शब्द वापरीने कहीयो तो श्रेयस्तर हृ-अदृक संपूर्ण अंशे विश्वसनीय हो. काठ्य सं. १७७० कर्तिक सुह देने भुववारना हिवसे पाठ्यमां रचायु हो, एरेणु प्रत पाणु ए ज हिवसे लाघाठ छावी लेइयो, एम मानवामां वापेन नथी.

मृण काठ्य

॥ द० ॥ श्रीगुरुन्म्यो नमः ॥ हैँ नमः ॥

(सुणि सुणि कंता रे सीध सोदामयी ए देशी)

मृद्धनुष आकार्यै अक्षरहै, मध्य लकाट प्रभा हृषि विस्तरहै
(त्रूटक)

सुविस्तरहै तस्म तेज महिमा हृदय कमल मालहै धरी,
गायन्म्यु जिन पास लटेवउ, जसु छीरति जगि संचरी;
कहा कालि एह मूरति हृषि आहि न जांधीहै,
घणे हैवे पूरु प्रतिमा, तिष्ठृष्टि ऊर्ज वभाषीहै^१.

२. नेन शुर्वरै कविअा, भाग २ भृ. ५०३-५

३. नेन शुर्वरै कविअा, भाग २ भृ. ५०५-१२

अंक २]

भट्टेवा पार्थिनाथनी उत्पत्तिनुँ स्तवन

[४५]

(हेती)

इम गीतारथ वाणीपरंपरा, सुखुर्ध भाष्य के वृद्ध श्रुतधरा
(तूटक)

श्रुतधरा भाष्य हेश इडर भादुअर एक गाम छह,
तिहा वस्त्र सुरचंद सेहु जाणो, द्विद्रुतुं ते ठाम छह;
तसु कौर्क कलह, पुण्य चोगाई, प्रतिभा धरि घरगट थह,
धर्मी लाछिलीला सेठ पाम्यो, द्विद्रु ठशा छ्रिं गर्ह. २

(हेती)

धर्मी द्विस प्रतिभा तसु धरि रही, राय इडरिये ते प्रवृत्ति लही.

(तूटक)

लही प्रवृत्ति पास डेरी, सेठनर्ह चरमुभ कहह,
'मुझ आपि प्रतिभा पास डेरी, ने धरि तुअ घरतो वहह;'
सेठ कहह, 'ओ किंभ आयु? लव समाणी ने अछह.'
तव भूप भाष्य, 'बलह लेस्यु.' सुणी सेठ धर्यो पछह. ३

(हेती)

धसमस सेहि ते प्रतिभा भय धर्मी, क्षेत्रह लंदारी ते राम घटित तखुह.

(तूटक)

सुकु लेह तव भूप आयो, निरण्य, प्रतिभा नवि जही,
डौधह करी तसु गेह लूट्यु, अहु भता हाथह चढी;
ते क्षेत्र मांहह धान्य अहु लह डौट्यिक सुणी थयो,
जुओ पास वसिया पुण्य अहु लह, धर तणो खुडो गयो. ४

(हेती)

पाट्यु नयरनह पासह चंद्रावती, रविचंद व्यवहारी तिहां शुभमती.

(तूटक)

शुभमति पण्य निःस्व जाणो, धन भाष्य माटिम कसी ?
हिंग तेल भीहु मरिय वेचह, पेट भरह इम क्समसी;
जक्षराज तुहो सुपन आवी, कहह, सुषु रविचंद ओ,
तुअ भाग्य इलीड, हुण टलीड, करम करि अविलंभ ओ. ५

(हेती)

भादुअर गामनह गांदरह जाणीह, राम घटिलनुँ क्षेत्र वणाणीह.

(तूटक)

ते मालह छह पास मरति, तिहां तुं वहिलो आवने;
नयणे हेआहुं तुअनह हुं, पूलु प्रणुमी भावने?
परभाति जायो सेड, सुपनुं साचुं जाणी जांचर्यो

[४६]

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

[૧૫૮]

એક વહિલ લેધ, કોઈ ન જાણું, તિણું થાનકિ જઈ જેતરો. ૬
(દેશી)

તડુતલાઈ પ્રતિમા રે હીઠી સોહામણી, પૂજુ પ્રથમી રે ભગતિ કરી ઘણી.
(રૂટક)

વહિલ માહિ પાસ મૂરતિ લેધ નગર નિઃ આવીએ,
‘ધણું સુખદાંદ’ હુસ્યદ,’ તુઅનદ,’ જક્ષદ’ ઈમ સમજાવિએ.
સંપત્તિ સાડુ સેવ કરતો; એક દિન જક્ષ સુપનાંતરિ,
‘પ્રાસાદ’ પાસ જિણુંદ કેરો કરવીએ ડેવટ લર્દ.’ ૭
(દેશી)

સેઠ પયંયદ રે, ‘કિમ હુક્ક ધન વિના?’ તવ જક્ષ ભાખદ રે, ‘સુણું તું એકમાના.
(રૂટક)

મુઝ કેડિ આવો, ધન હેખાડું?’ વેહદિં ધન નિરખાવિઉ;
મન આશ પૂળી, સેઠ હુરણો, પાસ ભુવન મંડાવિઉ.
લાંબા રંગમંડપ, ઉત્તાંગ તોરણુ, પાસણુ સુપરિં જડયાં,
નાટિક કરંતી પૂતલી બહુ ચંદ્રવદન અનોપમ ધડયાં. ૮
(દેશી)

દંડ ધળ લહિકંતી ઉપરિં, કલસ ચડાયો સુહુરતદ’ શુલપરિં.
(રૂટક)

શુલપરિં શ્રીપાસ થાયા ચૈત્યદ’ ઉચ્છવ અતિ ધણુદ’,
પનનર પાંત્રીસદ’ આખાત્રીજાઈ, રમ્ય વાજિન્ રણુઅણુદ;
પુહુલીમાં સુપ્રતાપ પ્રસર્યો, સંઘ આવહી ઊલટી,
કરદ્ય પાત્ર જુગતિં, લાવ ભગતિં મોટા હુણ જાઈ મરી. ૯
(દેશી)

બ્યાવહારીનાં રે પાંચ સર્જ ગાડલાં, ભાર્યા લરીયાં ચલાવદ ઉતાવલાં.
(રૂટક)

ચૈત્ય આગદિ નીસર્યા, પ્રબુ પાસનદ’ લેટયાં નહી;
જક્ષનાજ કોષો, શક્ત થંહ્યાં, સુરવર કહુદ સુણુયો સહી,
‘ચાત્ર કર્યા વિષુ કીમ જાયો? આશાતના જિનની કરી;’
તવ લેટ લેધ પુરુષ આવ્યા, પાસ જિણુંદ આગદિ ધરી. ૧૦
(દેશી)

પાસ લેટેખઉ નામ તિંણિં થયું, ગુણ ગાતાં મુઝ હુખું સવિ ગયું.
(રૂટક)

ગયું હુણ સવિ જગત્રય કેડું, મહિમા મહીઅલ વિસ્તરો,
જરણ તવનો સંબંધ લેધ સંક્ષેપદ’ મર્ય જિધરો;

અંક ૨]

શ્રી ઇલવર્ધિપાર્વનાથજીનો ૪૬

[૪૭]

અદ્યસેન નરપતિ, માતરામા ખોલઈ લાડ જિંણું લડ્યાં,
તેહ નંદન સ્તવીયો, સુખ ઢીયો, શત્રુ શિર સંકટ પડ્યાં. ૧૧
(દેશી)

સવંતસતર સીતેરુ ભલો, કાર્તીંક માસનો શુક્લ પક્ષ ઉજ્જો.
(તૃતીં)

કર્મવાટી છઠ્ઠી યુધ દિન, પ્રધાન શાખા સોણ્ણો.
પુનિમ ગચ્છ સિરિ મહિમગ્રલસૂરિ શ્રીતિકાંતિ સોણ્ણો,
તસુ ચરણસેવક ભાવરતનઈ પાસ પ્રેમર્થ ગાઈઓ,
પતનપુરમાંહિ ધણુર્ધ જાયાંહિ, અદ્ધિ સમુદ્ર સુખ પાઈઓ. ૧૨
ઇતિ શ્રીમદેવાપાર્વનાથસ્યાત્પત્તિ સ્તવનં સમૂર્ણમ् ॥ શ્રીરસુ કલ્યાણમસુ । મુનિ ભાવરને
લિપિકૃત શ્રેષ્ઠતારમ् ॥

નાનુ વાદળપદ, કઠવાળોળ, અમાવાદ. તા. ૧૪-૧૦-૪૨

શ્રી ઇલવર્ધિપાર્વનાથજીનો ૪૬

સાંશ્રાદક:- શ્રીયુત સારાભાઈ મહિલાલ નવાખ, અમાવાદ.

॥ દોષા ॥

પ્રલાપૂરણુ પ્રણુમીયે,	અરિગંજણુ	અરિહંત;
સાચો સાહિણ તું સહી,	લયલંજણુ	લગ્વંત.
વામાનંદન વંદીએ,	દોલતિ(ત)નો	દાતાર;
કીરીથી કુંજર કરે,	સેવકને	સાધાર.
શ્રી ઇલવર્ધિ મોટો ધણી,	અંકલમંદ	અણીંહ;
ભવ ભય ભાવહિ(ઠ)લંજવા,	તું સાફ્લેલા	સિહ.
પાયકમલ તુજ પ્રણુમતાં,	અધિક વધે	આણુંદ;
હાદો મોટો દેવતા,	વંદે	સુરનરવુંદ.

॥ મોતીહામ ૪૬ ॥

કેતે તુજ વંદે નરના વુંદ,	કેતે તુજ સેવા સારે ઈંદ;
કેતે તું અધિક દીયે આણુંદ,	કેતે તું હુંચિ(ર) ગમાવેં હંદ.
કેતે તું દીએ અભૂતાં પૂત,	કેતે તું સાધેં સધલા સૂત;
કેતે તું આણે મહીયલ મેહ,	કેતે તું નવલા ધારે નેહ.
કેતે તું હું હુરિ હુરેં દાલિદ,	કેતે તું સોહે સારદ ચંદ;
કેતે તું પરતો પૂરણુહાર,	કેતે તું અડવડિયાં આધાર.
કેતે તું ભાજે લાવઠલુખ,	કેતે તું અણવડિયાં આધાર.
કેતે તુજ નમતાં નવનીધ હોય,	કેતે તુજ આસ(શ)કરે સહૂ ડોય;
કેતે તું કુસ(શ)લ કરે કલ્યાંણુ,	કેતે તું દોલત દીએ દીવાંણુ.

[४८]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[१५०]

केते तुं भेर समो भूमि भन्न, केते तुज लोङ कहे धन्न धन्न;
 केते तुं खालद जेम अरन, केते तुं आपें परिवत अन्. १०.
 केते तुं रांडाने करे राणि(व), केते तुं सेवा हे सीरपाणि(व);
 केते तुं जेडि(ड) लोगि(ग) संज्ञेग, केते तुं सर्व गमाउ सोग. ११.
 केते तुं पीसुन इरे पें माल, केते तुं समर्थौ करे सगाल;
 केते तुं चिता करे चकचूर, केते तुं विध्व विडा(दा)रे द्वर. १२.
 केते तुं आपे अवी(वि)रल वाण्य, केते तुज इच्छा एही अहिनाण्य;
 केते तुं सधेही सिरहार, केते तुज डोई न लोपे कार. १३.
 केते तुं सेहे मोटो साध, केते तुं आगम गुणे अगाध;
 केते तुं संस(श)य लाने सर्व, केते तुं गाले हुशमन गर्व. १४.
 अनंति अनंति अनंति अनंति, लखे लेट्यौ श्रीलगवंत;
 सुप दायक साच्चा तोरो साथ, ज्येष्ठा परमेसर पारसनाथ. १५.
 अदाप अदाप अदाप, सहा तुं सेवकने परतध्य(क्ष);
 अधिक अधिक हीयें आणुंद, ज्येष्ठा इलवर्धिपास निषुंद. १६.
 अपार अपार अपार अपार, अनाथ नराने तुं आधार;
 अगम्य अगम्य अगम्य अगम्य, धडे एक साच्चा तोरो धर्म. १७.
 चिह्नं हिसि अटवीमांहि अभीहि, निहां विचरे सभला सिंह;
 तिहां तुं सेवकने निष्टारि(रे); कुपा करी भेड़वें चेले पार. १८.
 लहां लहां सभरे सेवक जेह, ती(ति)हां तुं इच्छा पूरे एह;
 वहु एम अतुलि केता तुज निळ, मोटो तुं पारसनाथ मरह. १९.
 अला(द्वा) तुं एकलभद(द्वा) अभीहि, न लोपे डोई तोरी लीह;
 मया हवे मोसुं करो महाराज, परतध्य(क्ष) इच्छा पूरो आज. २०.

॥ कलश ॥

इच्छा पूरो आज, सुपरे सेवकने संधारो;
 निनवर पास निषुंद, सहा हुं सेवक धारो. २१.
 कल्पवृक्षथी अधिक, कुपा भो उपर झीने;
 श्री अञ्चसेन सुतन, धण्डी तुज होलत दीने. २२
 श्री अरतरगच्छ सुपसाउदें, सार ए(हे?) मनस उचरें;
 इलवृधि राय मोटो धण्डी, सेवकने सानिध उरे. २३.

“इति इलवर्धि पार्श्वनाथ छंद”

प्रस्तुत छंद एक प्राचीन हस्तलिखित गुरुकामाथी मणि आवेल है. ते उपर्योगी समझने अहीं आयो हैं. आ छंदना कलाशनी छेष्ठी कठीना अीजन चरण्यां ‘अमजस’ शब्द आयो है तोने ‘हेमजस’ एम उछलीये तो आ छंदना रचनिता भरतर गच्छीय मुन हेमजस गण्डी शकाय.

प्रतिशा-पालन

लेखकः-पूज्य मुनिराज श्री मुशीलविजयज्ञ

पृथग्निना भूषणयुद्ध, विराट हेशने विषे हेवलोक्ती स्थधाँ करतुं अने प्राणीभावने आनंद पमाइतुं ओवुं पेगालपुर नामतुं नगर हुं. त्यां परमप्रतापी महापराक्रमी श्री श्रीचूगा नामतो राजन राज्य करतो हुतो. राजन सहाचारी हेवाथी प्रग पण सहाचारी हुती. राजने प्रग पर ओट्लो अघो दाय हुतो के आज्ञा राज्यमां डोध पण प्राणी जुगार, चोरी, परख्योगमन धृत्यादि डोधी पण हुर्व्वसनतुं सेवन न करी राक. राजने जो आअतनो ओट्लो अघो अखुगामो हुतो के तेने अभर पडतांती संघर्ष ए मनुष्यने सम्बत शिक्षा करतो अने वर्षत आवे तेने हेशनिकाल पण हुती हुतो. पोताना कुड़ूं परिवारनी पण परवा करे तेवो न हुतो. औह राजराणीओ पण तेनाथी थरथर द्वृजती, अने औप ज भर्याहामां रहेती. आनी गुम्फ तपास करवा गुम्फयरो राजनी आजाथी नगरमां चारेतरह ध्यान राखता हुतो.

आ राजने पुष्पचूगा नामे पुत्र अने पुष्पचूगा नामे पुनी हुती. यौवन-अप्यन्तराने प्राप्त थां राजकुमारनां योग्य राजकुल्या साथे लग्न थां. अमुक समय वीत्या आद राजकुमार वंकचूगा कर्मसंघोजे जेवी अराम सोअते चडी गयो के ओवो ओक पण हिवस आली न ज्ञय के वंकचूगा आनंदीमां जुगार न रम्यो हेय. आ आअतनी गुम्फयरोने पण अभर पडी, पण राजकुमार ओट्ले करे शु? राजने आ आअतथी वाक्षी करवानी पण डोधती हिम्मत चालती नहि, रम्ने नोकरीमांदी नरतरह थवुं पडे! धारे धारे आ वात नगरमां पण प्रसरवा मांडी. नगरवासीओ आ प्रमाणे राजकुमारनी वांझी चालते लीवे तेने पुष्पचूगने घहले वंकचूगा नामथी संभाववा लाग्या.

पण ओक वर्षत राजकुमार राजना अपाटामां आनी गयो. राजकुमारनी अयोग्य वर्ताल्लुंक हेखीने राजने वालुं हु; अ थयुं. राजने पोताना पुत्रनी परवा कर्त्ता विना के पुत्रना मोहमां इसाया विना, एकदम नगर छारीने चाल्या ज्वानो तेने हुक्म करी होयो. तानीओ इरमावे क्षे के-वैरी, उडवानव, व्याधि, वाह, अने व्यसन आ पांचे वडार न्ने वृद्धि पामे तो भदा अनर्थकर्ता थाय क्षे. वणी हुत (जुगार) व्यसन ए तो सर्व आपत्तिनुं धाम क्षे, एट्लुं ज नहीं पण तेना प्रभावथी सुखुद्धि पण हुर्व्वद्धि थहु नय क्षे अने कुवने कलांक लगाडे क्षे. ए व्यसन अदारे व्यसनने जेची लावे क्षे. आ हुतथी ज नण जेवा राजवने राज्य छाइतुं पडयुं, राणीनो वियोग थयो, अने सर्व ऋद्धि-सिद्धि चाली गह. हुतथी महाअविष्ट पाच पांडेवोने पण स्वदेश छाइवो पडयो, जंगलमां भटक्कुं पडयुं, अने महादुःखो सहन करवां पडयां. वंकचूगनी पण हुतथी जो ज गति थध.

वंकचूग पण स्वख्यो अने स्वलगिनी पुष्पचूगाने साथे लई हेशान्तर रवाना थध गयो. अने चालतो चालतो भीवडीओना नुत्यथी अलांकृत जेवी ओक पवित्रो विषे पहोंच्यो. कर्मसंघोजे पवित्रपति भृत्यु पामेलो हेवाथी पद्मीवाणीओ तेनो सत्कार करी

तेने पवित्रपति तरीक्त त्यां राख्यो. एक तो स्वयं अराय होता ज एमां चोरी करवामां भरहूर ऐवा पवित्रवाणाओंनी सोांत थई एटले तो 'कडवा तुंभडानुं' शाक अने उपरथी सोमवतो वधार' जेवुं थयुं. एमांय पाणे सडुतो उपरी बन्हो एटले तो पूछतुं ज शुं? अदारे लक्षणे पूरो. अस छने तो गामेगाम अने देशेश चोरीओं करवी, लुटक्कांटों करवी, खीओंनी ईनजतो लुटवी, जुगाटां रमवां, ए ज एतुं काम थध पउयुं. थोडो समय जतां वंकचूण तो लुटवीर चोर तरीक्त प्रसिद्ध थयो. लदा लदा राज महाराजेना लंडरा नेतजेतामां लूंटी लावे! आम थोडो समय जतां तो पुष्टी ५०० तेणे एकदुः कर्युं. आ नेई पवित्रवाणाओं पण् खुश थध गया अने एनी वाहवाह ऐवना लाभ्या.

ऐवलामां वर्षांअंततुनो समय आयो. भयूरो टहुआर करवा लाभ्या. नेतजेतामां आखुं आकाश काणा लम्भर नेवा वाढाव्येथी धेराइ गयुं. सूर्य अदृश्य थध गयो. विजयोना चमकारा थवा लाभ्या. आकाश गर्ववा लाभ्युं. वरसाह नेतरेशारथी वरसवा लाभ्यो. मेघराजन्ये तगानो, नहीओ, सरोवरो, कुवाओमां भरती करवा मांडी. पृथ्वी पाणीथी रेलमञ्जेलम थवा लागी. आ आजु आचार्य महाराज तानतुंगसुरि परिवार सहित विहार करता वरसाही भींजगेला पवित्र लगी आवी पहेंच्या. हो आचार्य महाराजे आगण विहार करवो मोडुइ राख्यो. पवित्रपति वंकचूण पासे चोमासु रहेवा माटे वसतीनी याचना करी. त्यारे पवित्रपतिये कहुं कै-जे तमे अहीं रहिने काठने उपहेश न आपवानी कमुकात करता हो तो खुशीथी रहो. अमारी रज छे." आचार्य महाराजे लावी सारुं जाशीने ते वात कमुक राभी. आह वंकचूणे आपेक्ष वसतीमां आचार्य महाराज सपरिवार रहेवा मांडया. आचार्याहिंगे स्वाध्याय ध्यान तीव तपश्चर्या वगेरेमां आतुर्मास पसार कर्युं. आहमां सर्व वसती वंकचूणे भगावीने कहुं कै हो अमे अहीथी अन्यत्र विहार करथुं. पवित्रपति वंकचूण पण् पोताना परिवार साथे आचार्य आहिने वणावा साथे याल्यो. यालतां यालतां पवित्रपतिनो सीमाडो पूरो थयो एटले पवित्रपतिने आचार्य महाराजे पूछतुं के "आ हह कोणी छे?" पवित्रपतिये कहुं के "मारी नयी". त्यारे आचार्य महाराजे कहुं के "हे पवित्रपति! अमे अमारा रथानमां रहिने निरंतर स्वाध्याय-अध्ययनाहिमां तत्पर रही चार मडीना पूरा कर्या, तेना अहलामां तमे कांधक आत्महित करवा माटे प्रतिज्ञा करो! तेनाथी तमने धण्यो लाल थशे. प्रतिज्ञा-नियम ओ समस्त लक्ष्मीना सांकण वगरना अंधन ३५ अने भूत-पिशाचादीनो वगर अक्षरने रक्षामंत्र छे." ते सांलजोने पवित्रपति वंकचूणे आचार्य महाराजे प्रतिज्ञा आपवानुं कहुं. समयज आचार्य अगवते तेने चार प्रकारनी प्रतिज्ञा करावी:—

(१) कांध हिवस अग्नेयां इण आवां नहीं.

(२) कांधनी उपर प्रहार करतां पहेलां सात पगलां पाणां हड्या आह प्रहार करवो.

(३) राजनी राणी प्रीतिवाणी हेय छतां कांध पण् भोगे छच्छवी नहीं.

(४) कागडानुं मांस कांध पण् हिवस आवुं नहीं.

आचार्य महाराज आगण चालता थया. प्रथम इती पवित्रपति वंकचूण पण् पाणे वणा पवित्रपति आवी पहेंच्यो.

અંક ૨]

પ્રતિજ્ઞા-પાલન

[૫૭]

વંકચૂળ પણ ગમે તેવા પ્રસંગો ઉપરિથિત થાય, જીવ જે ખમમાં આવી ગય, છતાં પણ જરાય પાછી પાની કર્યા વિના પ્રતિજ્ઞાઓનું પાલન કરતો હતો. એમ કરતાં એકેક પ્રતિજ્ઞાની કસેટિ ડ્રીની રીતે થઈ અને તેમાંથી વંકચૂળ ડ્રીની રીતે પસાર થયો અને તેનાથી તેને કેદ્યો અથે ફાયદો થયો તે આપણે જોઈએ.

ઘેણી પ્રતિજ્ઞાની કસેટી

એક સમયે એક મોડું ગામ લુંઠિને પાછા ફરતા તે માર્ગમાં ભૂલો પડ્યો. આમને અટકતાં અટકતાં તેને નણું નણું લાંબણું પસાર થઈ, ભૂખ અને તરસ મુશ્કળ લાગી છે, આત્મા અંદરથી તવાપણ થઈ રહ્યો છે, શરીર અસ્વસ્થ બની ગયું છે. એવામાં ચોર સેવકાંગે ડાઈ રથને ફળ દીઓઃ ફળ પણ જેનારને આનંદ ઉપજાવે તેવાં હતાં. અદારથી તે ખુઅસુરત લાસતાં હતાં, પણ અંદરથી તો વિવિધ કિયાકના ફળ હતાં. ખુઅથી પીડિત ગોત્ર સર્વે ત્યાં ગયા. વંકચૂળે ખૂલ્યું કે “આ ફળનું નામ શું છે?” ત્યારે ચોર સેવકાંગે કહ્યું કે “નામની અમને ખરર નથી, પણ હેખાય છે બચાં મનોહર” વંકચૂળે કહ્યું કે “ભાઈઓ! એવાં અગણ્યાં ફળ ન આવાની મારે પ્રતિજ્ઞા છે મારે હું તો નહીં ખાડીં. તમે પણ તેને ન ખાશો.” પણ નિવારણ કરવા હતાં તેઓ માન્યા નહીં. ફળ તેડીને ખાશાં ખાતાં તો અડું મીડાં લાગ્યાં પણ જ્યાં વિષનો વેગ વાપ્યો. કે પ્રાણું હેલ છાડી પરલોક રીધાયો. વંકચૂળે વિચાર્યું કે આ તો જીવ મુત્યુને શરણું થયા. જરૂર વિષફળ હોવાને જોઈએ. એકનો લાંધી નીકળી સ્વર્ણથાને આગ્યો. મધ્યરાત્રીનો વિચારવા લાગ્યો. કે-અહો! ગુરુમદારાજને અપણાં ફળનો નિયમ કરાગ્યો તો હું તેમાંથી અણી ગયો. નહીંતર હું પણ મરણને શરણું થાત. આ પ્રથમ પ્રતિજ્ઞામાં સફળ થવાથી વંકચૂળની અદ્ધા દાદ બની જને ગુરુમદારાજનો પરમ ઉપકાર માનવા લાગ્યો.

ઝીજ પ્રતિજ્ઞાની કસેટી

એક વર્ષને વંકચૂળ અહાર ગયેલો. આ આજુ તેના વૈરી શરીરના નાટકવાળાઓ આવી પહેંચ્યા. તેના મહેલ પાસે નાટક કરવાની શરીરાત કરી. મહેલમાંથી વંકચૂળને પોલાવા લાગ્યા. ત્યારે તેરી અગ્નિનો વિચાર્યું કે જે આ લેકેને :ખરર પડ્યો કે વંકચૂળ અણીં નથી, તો નિઃશસ્ય એમનો રાજ જે આપણો વૈરી છે તે આવી આખા ગામનો નાશ કરશે. એમ વિચારી સમયન મુણ્યચૂળાંગે સ્વીનો વેગ કાઢી નાખી. પોતાના ભાઈ વંકચૂળનો વેશ ધારી સજા થઈ, વંકચૂળ જ કે એમ ભાન કરાવતી, અહાર આવીને યોગ્ય સ્થાને એડી. નાટક પૂરું. થયા બાદ દાન આવી મહેલમાં આવી એકહમ એના એજ વસ્ત્રે પોતાની બોગનઈ સાથે પવંગમાં સુર્જ ગઈ. નાટકવાળાઓ લાંધી યાદ્યા ગયા. શર્નિનો ધાર્યો સમય વ્યતીત થઈ ગયો. એટથામાં અહાર ગયેલો વંકચૂળ પાછો આવ્યો. મહેલમાં દાખલ થઈ સુવાના ઓરડામાં ગયો ત્યાં તો પવંગમાં પોતાની સ્વી સાથે ડાઈ પુરુષને સાતો જોયો. જેતાંની સાથેજ ડોધથી ઉલ્લગાધ ગયો. અંઝી લાલચોલ થઈ ગઈ. અરે, આ દુષ્પ ચંડાજ કોણ છે? જેને હું મારી નાખું. એમ વિચારી લાથમાં તરવાર લાંધી અને અનેને મારવાને મટે જ્યાં ઉગામ્યું ત્યાં તો એકહમ પ્રતિજ્ઞા સંભરી આવી.

[५२]

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

[વર્ષ ८]

તરતજ સત્તન પગલાં પાછે હડ્યો. આ બાજુ પુરુષ વેશમાં સુતેલી પોતાની પુષ્પચૂળા ખેણ એકદમ તરવારના પ્રદારના પડધાથી જગ્યી ગઈ. જગતાં જ પેતાના ભાઈને જોઈ, “મારો ભાઈ વંકચૂળ ધાયું જુદો” એમ કહી શબ્દી થએ. એટલે વંકચૂળે તેણીને પ્રાણમાં પૂર્વક પુરુષના વેશનું કારણ પૂર્યું. ખેણે ભાઈને સર્વ વૃત્તાંત કહી સંભગાયો. ભાઈની કોષ સાંત પડ્યો. તરવાર હાથમાંથી છોડી દીધી અને હર્ષદીઓ થઈ ગુરુએ આપેલી પ્રતિજ્ઞાની પ્રશંસા કરવા લાગ્યો. અહો! તે ગુરુમહારાજ નિઃશંસ્ય મદજીવાની હતા. જે ખને આ પ્રતિજ્ઞા ન કરાવી હોત તો આજ મારા હાથે સ્વભગ્નિની અને સ્વીનો ધાત થાત.

બીજી પ્રતિજ્ઞાની કસોટી

એક સમયે વંકચૂળ રાત્રિએ ચોરી કરવા ડ્રાઇ વણિકને વૈર ગયો. ત્યાં બાપ હીકરો નામા સંઅંધી તકરારમાં પડ્યા હતા, અને જીંચા સ્વરથી એવાતા હતા. વંકચૂળ વિચાર્યું કે આપણે અહીં નહીં ફાળ્યો. એટલે ત્યાંથી નીકળી વેશનાને વૈર ગયો. ત્યાં પણ વેશના કોઈ જોડિયા સાથે બોગ બોગવતી હતી. એટલે ત્યાંથી પાછે ફર્યો. અને વિચારના લાગ્યો કે આજ સારા શુક્રન થયાં નથી લાગતાં, ન્યાં ત્યાંથી પાછા જ ફર્યું પડે છે. એમ વિચાર કરતાં કરતાં તે પહોંચ્યો રાજમહેલે. પાછળાના ભાગમાંથી રાજમહેલની ભીંત ફાડીને અંતઃપુરમાં ગયો. રાણી કંઈક જાગતી અને કંઈક નિદ્રા દેની શથ્યામાં પડેલી હતી. અચાનક વંકચૂળને હાથ તેને અંગે લાગી ગયો. ડ્રામ્બ સ્પર્શથી એકદમ રાણી જગ્યી ગઈ અને સ્વરૂપના વંકચૂળને હેખ્ખી રાણીની મનોભાવના પવટાણી. કામહેવે જેર અજમાયું. રાણીની રજેરગમાં કામ ઉદ્વીપન થયો. રાણી વંકચૂળને વિનતિ કરવા લાગી પણ વંકચૂળને ગુરુમહારાજે કરાવેલી પ્રતિજ્ઞા સાંભળી આવી. તરતજ રાણીને જણાવી હીધું કે “તું તો મારી માતા સમાન છે.” રાણીએ કીધું “અદ્યા માની જા! નહીંતર તારું આવી અનશે.” જ્તાં વંકચૂળ પ્રતિજ્ઞાથી લેશ માત્ર ઉગ્યો નહીં. ત્યારે રાણીએ એકદમ ટોંગ કરી તેના પર એઢું આળ અઠાવવા માટે ખુમાયું કરી મૂક્યો. ‘અરેરે, આ ડોઈ અહમાસ હરામણેર મારી લાજ લુંટવા આવ્યો છે.’ રાણીનો પોકાર સાંભગતાં જ રાજસેવકાં ત્યાં હોડી આવ્યા. અને વંકચૂળને પકડી આંધી લીધો અને પ્રભાતમાં સેવકાએ રાજ સમક્ષ ખડો કર્યો અને રાત્રિના વૃત્તાંથી રાજને વાકેદ કર્યો. પણ ખુદ રાજએ જ રાત્રિમાં ભીંતની પાછળ રહીને નજરે જ બધું નીહાયું હોવાથી. વંકચૂળને શિક્ષા નહીં કરતાં તેના સહગુણોથી રજિત થઈ રાજનો તેને પોતાનો સામંત બનાવ્યો. અને રાણીનું પણ છૂપાવી હીધું, જણે પોતે કશું જનાયુતો જ નથી! વંકચૂળ રાજના ઉપહેશથી ચોરીનો ધર્ઘા છોડી હઈને સન્માર્ગે પ્રર્વતવા લાગ્યો. સારનો સંસર્ગ થતાં સૌ સારા વાનાં જ થાય.

ચોથી પ્રતિજ્ઞાની કસોટી

એકદા રાજએ વંકચૂળને ડોઈ મહાન શત્રુને જીતવા માટે મોકદ્યો. જીત મેળવીને વંકચૂળ પાછે આવ્યો. ‘પણ તેને ધર્ઘા પ્રફારો લાગવાથી દુઃખી થતો વૈર આવી પવંગે સૂછ ગયો. વૈશ્વોને એવાતાના. વૈશ્વોએ ઉપચાર શરૂ કર્યો. પણ પ્રફારની વેનાથી બીજી રોગો ઉત્પન્ન થયા, પણ મૂળ વેના મરી નહીં. વૈશ્વોનું ઔષ્ણ ઉલ્લંઘ પડવા માંયું. અને હિવસે હિવસે તેનું શરીર ક્ષીણ થવા લાગ્યું. હેતે તો તેને ચોરી પણ ગમતી ન હતી.

अंक २]

प्रतिज्ञा पालन

[५३]

वेदनाने कर्त्त एवं न हो. राजन्ये पाण्य ऐनो रोग मराडवाने आआ नगरमां पट्टु
वगडाओँ के 'जे आ वं' व्यूणे लुवाडशे तेने राजन यथेच्छ हान आपशे.' आ सांखणी
जेक पुराणा वेद आवी औपच अताज्युं के 'कागडाना मांसनुं भक्षणु करो.' वंकचूणने
गुरुमंडाराने आपेही प्रतिज्ञा सांभरी आवी. तेणु किंवुः "वैदाग्रज !
लले भारी प्राण वाल्यो जन्म, पाण्य भाग्यथी ए भक्षणु नहीं थक्ष शहे."
वैद तो आ सांखणीते आभोज अनी गयो. पठी वंकचूणने समजवावा माटे
राजन्ये धर्मकर्मां जाणु ऐवा तेना भिन्न शुद्ध आवड किनहास श्रेष्ठीते तेवा भाष्यस
मोक्ष्युः. राजना माण्यसे अपर आवी के तरत ज किनहास श्रेष्ठी त्यां आव्या, अने
पोताना भिन्नने किंवुः के "हे भिन्न शरीर सुख के के ?" वंकचूणे किंवुः के "हे धर्मधंघो !
हे ध्रियभिन्न ! तुं लले आबो. भारुं शरीर अस्वस्थ छे. कारणु के आ शरीर रोगनुं
धर छे. आ उवित छ ते कर्मने आवीन छ. हे भिन्न ! आशवना करावनी ते
तारे आधीन छे. माटे तने ज्ञेम उचित लागे तेम भने धर्मपरायणु अनाव."
किनहास पाण्य तेनी परीक्षा करवा आतर ऐव्यो के "तमारा आशेष्य अर्थे आ कागडा
मांसनुं औपच अहणु करो". ते सांखणीतानी साथेज सालसिक्कां श्रेष्ठ ऐवो वंकचूण
क्षेत्रपूर्वक ऐव्यो के "शुं ऐद्या तमे ? लले आ हेह पडी ज्ञते, उवित कुं आवी रहे
तो पाण्य शुं ? हुं भारी प्रतिज्ञानुं अंडन कहापि करीश नहीं. लले सुर्य भक्षिम उगे ! लले
भेदु अवित थाय ! लले समुद्र भाजा भुक्त ! लले आब दूरी पडे ! पाण्य भारी प्रतिज्ञानो भांग
नहीं ज थाय. उव कले ज्ञते. होय तो लले आज जन्म. तेनी भने परवा नथी. भारी
परलव डेम सुधरे ऐ ज हुं तो जप्ती रखो छुं."

आ प्रेमाणु भरणुनी अंतिम दशामां पाण्य गोताना भिन्न वंकचूणने दृढ लेई,
किनहास श्रेष्ठीते तेने चार शरणां अंगीकार करावी महामंगवकारी नमस्कारादि मंत्रो
सांखणीत्या. सर्व ज्ञनी साथे अमतभासणां कराव्यां. अने वंकचूणनो प्राणु पंखी
नमस्कार मंत्रनुं कृच्यारणु करतो आ हेह छोडी परलेक्मां सिधावी गयो. अने अंतिम
शुभ आग्रहानाथी ते आरम्भ अस्युत हेवलोक्ह हेवप्यु उत्पन्न थयो.

धन्य हो ए वंकचूणने के ज्ञेषु गोतानी प्रतिज्ञाओनुं निःर रीते पालन किंवुः.

कुणा अने शास्त्रीय दृष्टिये सर्वांग सुंहर

भगवान् भहावीरस्वामीनुं त्रिरंगी चिन्त

१४"×१०" साईज : आर्टकार्ड उपर त्रिरंगी छपाइ : सोनेरी
बोर्ड : मूल्य-चार आना (टपाव खर्चनो होइ आनो लुहो.)

श्री बैनवर्म सत्यप्रकाशक समिति
जेशिंगलाईनी वाडी : धीकांदा, अमदाबाद.

सागरगच्छाय साधुओंकी उपस्थापना—दिनावली

संग्राहक व सम्पादक—पृज्य पंन्धासजी महाराज और कर्त्याणविजयजी गणे.

जन पुस्तक—भण्डारोमें विचित्र प्रकारकी ऐतिहासिक सामग्री भरी पड़ी है यह बात अब सर्वविदित हो चुकी है। आप पुराने भण्डारोंकी प्रथमसूचियां देख कर ही संतुष्ट न होयिये, उनके त्रुटक ग्रन्थ और रद्दी समझे जानेवाले लिखित पत्रसंग्रहका भी सूक्ष्म दृष्टिसे निरीक्षण करें, आपको उनमेंसे कइ उपयोगी चीजोंका पता लगेगा। विशेष करके ऐतिहासिक घटनावलियां, वैदिकके बहुमूल्य नुस्खे और ज्योतिषके सुगम तथा चुटकुले बहुमूल्य आम्नाय हाथ लगेंगे जिनका पढ़कर आपका चित्त फड़क उठेगा।

हमने अपने अन्वेषणमें अनेक बहुमूल्य चीज़ प्राप्त की हैं। जो इन विषयोंमें रुचि रखनेवाले विद्वानोंके लिये पर्याप्त रूपसे उपयोगी हो सकती हैं

‘सागरच्छीय साधुओंकी उपस्थापना—दिनावली’ का पन्ना जिसका यहां परिचय दिया जा रहा है, हमें इसी प्रकारके रद्दी पत्रोंको टटोलते हुये हाथ लगा था।

यह पत्र १९५५। इच्छा लम्बा चौड़ा है। इस लम्बे पत्रमें कुल १५८ पंक्तियां हैं और १२५ सवासौ साधुओंकी उपस्थापना (बड़ी दीक्षा) होनेकी संवत् मितियां हैं। किसकी उपस्थापना किसके हाथसे हुई इसका क्वचित् निर्देश हुआ है, सर्वत्र नहीं। इससे यह मालूम होता है कि जहां उपस्थापना करनेवालेका नामोंलेख नहीं है, वे सब उपस्थापनावें तंकालीन गच्छगति आचार्यके हाथसे हुई होगी। उपस्थापना लेनेवाले साधुके नामके पहले बहुधा उसके गुरुका नाम भी लिख दिया है, इससे यह भी सुगमतासे जाना जा सकता है कि कौन साधु किसका शिष्य था।

जहां उपस्थापना दी गई है कहीं कहीं उन गांवका भी नामनिर्देश किया गया है, इसी तरह क्वचित् उपस्थापना करनेके समयका भी सूचन किया गया है।

वर्तमान समयमें बहुधा वर्षाकालको छाड़कर दिनके पूर्वभागमें उपस्थापना कराते हैं, परन्तु इस पत्रस्थित सूचीसे ज्ञात होता है कि उस समय आश्विन शुक्ल १० को और इसके बाद वर्षाकालमें भी और अपराह्नमें भी उपस्थापना दी जाती थी।

आजकल दोक्षा, प्रतिष्ठा आदिके मुहूर्तोंमें मंगलवारको सर्वथा व्याज्य गिनते हैं जैसाकि ज्योतिष शास्त्रमें लिखा है, परन्तु इस उपस्थापनावलीको देखनेसे जाना जाता है कि उस समय मंगलवारको भी उपस्थापना दे देते थे।

अंक २] सागरगच्छीय साधुओंकी उपस्थापना-दिनावली [५५]

प्रस्तुत पत्र किसी एक ही वर्षमें नहीं लिखा गया। प्रारम्भके 'शीर्षक लेख' में संवत् १६९८ का निर्देश है और यह उपस्थापना-घटनावली तत्कालीन सागरगच्छीय आचार्य श्रीवृद्धिसागरसूरिजीके राज्यमें लिखे जानेका सूचन है। परन्तु इस लेखमें संवत् १७३६ तककी उपस्थापनाओंका एक ही लिपिमें निरूपण है अतः यह लेख संवत् १७३६ के वर्षमें लिखा जाना प्रमाणित होता है। प्रारम्भमें जो संवत् १६९८ लिखा है उसका यह तात्पर्य हो सकता है कि इस सालमें आचार्य श्री वृद्धिसागर गच्छपति बने हों और १७३६ तक गच्छपति रहे हों जिसमें आपके गच्छनायकत्वकालमें दी गई उपस्थापनाओंकी दिनावली आपके राज्यमें लिखे जानेका उल्लेख किया गया हो। कुछ भी हो पर इतना तो निर्विवाद सिद्ध है कि इनमें अधिकांश उपस्थापनायें श्री वृद्धिसागरसूरिजीके सत्तासमयमें हुई थीं, क्योंकि इनके प्राच्वर्ती आचार्य श्रीराजसागरसूरिजी जो सागरगच्छके आध प्रवर्तक थे संभवतः इस समयके पहले परलोकवासी हो चुके थे।

संवत् १७३७ से संवत् १७४२ तककी उपस्थापनाओंकी सूची दूसरे व्यक्तिके हाथकी लिखी हुई है और संवत् १७४२ से १७४४ तककी घटनावलीको लिपि तो इसी व्यक्तिके हाथकी है पर कलम स्याही बदल गई है।

इसके आगेकी लिपि तीसरे व्यक्तिके हाथकी है जिसने १७५६ तककी उपस्थापना-दिनावली लिखी है। इस तीसरे आदमीके लिखे हुए लेख विभागमें कुछ संवत् भित्तियां अस्तव्यस्त भी लिखी हुई दृष्टिगोचर होती हैं। एकदर इस पत्रमें संवत् १६९४ से लेकर संवत् १७५६ पर्यन्त के ६३ वर्षोंमें सागरगच्छके जिन जिन साधुओंकी उपस्थापनायें हुई थीं उन सबकी दिनावली इस पत्रमें दी हुई हैं।

पत्रमें जिन साधुओंकी उपस्थापनाका उल्लेख किया गया है उनके अधिकांश नाम 'सागरन्त' हैं। हाँ, कुछ नाम भिन्न प्रकारके भी हैं। इन भिन्न नामवाले साधु सागरगच्छके न होते हुए भी सागरगच्छीय आचार्यकी आज्ञामें रहनेवाले होंगे।

पत्रके तीसरे लेख विभागमें कुछ उन साधुओंकी उपस्थापनाकी भी यादी है जो श्रीविजयप्रभसूरिजीके आज्ञावर्ती थे।

यह उपस्थापनादिनावलीका पत्र प्राचीन ढंगसे चलती लिपिमें लिखा हुआ है। मात्र ३—४ जगह फकरे जुदे पाडे गये हैं, परन्तु हमने सुगमताके लिये प्रत्येक फकरा जुदा पाडकर उसके पहले (१—१) इस प्रकारके कोष्ठकोंमें उपस्थापना और उपस्थापना लेनेवाले साधुओंकी संख्या बतानेवाले क्रमांक लिख दिये हैं।

[५६]

श्री लैन सत्य प्रकाश

[४८]

उपस्थापना—दिनावलि प्रायः शुद्ध संस्कृतमें लिखी गई है अतः हमने अपनी तरफसे इसमें कोई फेरफार नहीं किया। जैसा पुराने पत्रमें लिखा है वैसा ही यहां लिख दिया है।

आहोर (मारवाड)
ता. ७-१०-१३४२

{

कल्याणविजय

सागरगच्छीय साधु—उपस्थापना—दिनावली

॥ दूर ॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ भट्टारकश्रीराजसागरसूरिगुरुभ्यो नमः ॥

॥ संवत् १६९८ वर्षे । शाके १५६४ प्रवर्तमाने । चैत्रमासादारम्य सकल-साधुनामुपस्थापनादिनानि लिख्यन्ते ॥ श्रीबुद्धिसागरसूरिराज्ये ॥

(११) संवत् १६९८ । शाके १५६४ । कार्तिक वदि २ दिने प्रभातसमये । मु. कल्याणसागरस्य उपस्थापना ॥

(२२) ॥ सं. १६९८ । शा. १५६० प्र. वै. शु. ३ दिने । प. तिलकसत्क मु. जससागरस्योपस्थापना ॥

(३३) सं. १६९५ । शा. १५६१ । माघ शु. ३ दिने । मु. हेम-सागरस्योपस्थापना । प्रभाते ॥

(४४-५-६) सं. १७०५ वर्षे । शा. १५७१ । वैशा. शु. १४ दिने । मु. बुद्धिसागर । मु. कृपासौभाग्य । मु. चतुरसागराणामुपस्थापना ॥

(५७-८-९-१०) सं. १७०५ । शा. १५७१ । द्वितीयाषाढ शु. ८ दिने । मु. क्षेमसागर । मु. हितसागर । मु. नयसागर । मु. कांति-सागराणामुपस्थापना ॥

(६।११-१२-१३) सं. १७०६ । शा. १५७२ प्र. । माघ शु. ८ दिने प्रभाते । मु. अमरविमल । मु. मानविमल । प. हर्षसागरसत्क मु. अमरसागराणामुपस्थापना प्रभाते ॥

(७।१४-१५) सं. १७०६ वर्षे शा. १५७२ प्र. माघ शु. ८ दिने । मु. हेमसौभाग्य । मु. मेघसौभाग्ययोरुपस्थापना प्रभाते ।

(८।१६) सं. १६९८ । शाके १५६४ प्र. ज्येष्ठ शु. ७ दिने प. सौभाग्य-सागरसत्क मु. कमलसागरस्योपस्थापना ॥

(९।१७) सं. १७०६ । शा. १५७२ फागुण शु. ४ दिने प. विनीत-सागरसत्क मु. धीरसागर उपस्थापना ॥

अंक २]

सांगरण्याधीय साधुआंडी उपस्थापना-हिनावली

[५७]

(१०।१८) सं. १७०७। शा. १५७३। माघ व. १४ दिने। उ. रत्न-
सागर ग. सल्क नरसागर उपस्थापना ॥

(११।१९-२०) सं. १७०८। शा. १५७४ माघ व. १३ बुधे प्रातः
पं. तिलकसागरसल्क मु. सुविधिसागररूपसागरयोरुपस्थापना शेषपुरे ॥

(१२।२१-२२) सं. १७०९। शा. १५७५। आषाढ शु. ८ दिने संध्यायां
मु. कांतिसौभाग्य। क्र. नाहनजी। उपस्थापना। पं. श्रीतिलकसागरगणिभिः कृता ॥

(१३।२३) सं. १७१०। शा. १५१६। ज्येष्ठ व. ४ शनौ। रूपसागरदीक्षा ॥

(१४।२४-२५) सं. १७१७। शा. १५८३ ज्येष्ठ शु. ११ दिने। पं.
विनीतसागरसल्क मु. रंगसागर। ग. भावसल्क मु. साधुसागरयोरुपस्थापना ॥

(१५।२६) सं. १७१८। शा. १५८३। कार्तिक शु. १३ दिने। सरेज-
मच्चे। मु. सुंदरसौभाग्यस्योपस्थापना ॥

(१६।२७) माघ शु. ७ दिने पं. हेमसागरसल्क मु. उदयसागरस्योपस्थापना ।

(१७।२८) माघ व. १ दिने मु. जयसागरस्योपस्थापना ॥

(१८।२९) फागुण शु. ३ भौमे पं। हीरसल्क मु. कपूरसागरस्योपस्थापना ॥

(१९।३०-३१) सं. १७१८ वर्ष शा. १५८४। वैशा. व. १० शनौ
मु. भेलसागर। मु. वीरसागरयोरुपस्थापना ॥

(२०।३२-३३-३४-३५-३६-३७) ज्येष्ठ शु. ४ रवौ। पं. विनीतसल्क।
मु. क्रदिसागर। पं. विद्यासल्क मु. धीरसौभाग्य पं. भाणसल्क मानसागर। पं.
कनकसल्क लालसागर पं. चतुरसौभाग्यसल्क सं. दीपसौभाग्य। ग. विनयसौभाग्यसल्क
मु. विनीतसौभाग्यानामुपस्थापना ॥

(२१।३८) आषाढ शु. १३ बुधे संध्यायां पं. सूरसागरसल्क मु. केसरसागर-
स्योपस्थापना ॥

(२२।३९) अश्वन शु. १० दिने श्रीपूज्यजीसल्क मु. दयासागरस्योपस्थापना ॥

(२३।४०) सं. १७१९। शा. १५८५ ज्येष्ठ शु. २ दिने। पं. भाणसल्क
मु. रूपसागरस्योपस्थापना ॥ सं. १७२८ पुनरपि ॥

(२४।४१) सं. १७२०। शा. १५८५ फागुण शु. ३ दिने उ. श्रीरत्नसल्क।
मु. महीसागरस्योपस्थापना प्रभाते ॥

(२५।४२) फा. शु. १० दिने। क्र. देवजी ॥

(२६।४३) सं. १७२०। शा. १५८६ वैशाख शु. ८ दिने पं० विनयसा-
सल्क मु० हंससागरस्योपस्थापना ॥

(२७।४४-४५-४६-४७-४८-४९-५०) वैशाख व० ६ दिने। प्रभात-

[४८]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष ८

समये । मु० मतिसागर । इंद्रसागर । ललितसागर । हीरसागर । चतुरसागर ।
लाभविमल । रनविमलानामुपस्थापना ॥

(२८।५१) आषाढ शु० ६ दिने प० अमृतसंक मु० सुखसागरस्योपस्थापना ॥

(२९।५२) कार्तिक व० २ दिने मु० लाभसौभाग्यस्योपस्थापना ॥

(३०।५३-५४) अ. वरधा । मु. कपूरसौभाग्ययोः का. व. द्वितीयायां उपस्थापना ॥

(३१।५५) सं. १७२२ शा. १५८८ वैशा. शुदि ४ संव्यायां मु. मोहनसागरउपस्थापना ।

(३२।५६) वै. शु. ५ दिने प. हेमसागरसंक मु. गंगमागरोपस्थापना ॥

(३३।५७-५८) सं. १७२१ व. शा. १५८७ व्ये. शु. २ दिने प. कुंवर
संक मुनि लावण्य । लीलसागरयोरुपस्थापना ॥

(३४।५९-६०) आषाढ शु. ३ दिने । उ. रनसंक मु. इन्द्रसागरललित-
सागरयोरुपस्थापना ॥

(३५।६१) कार्तिक शु० १६ दिने प. धीरसंक मु. अमरसागरोपस्थापना ॥

(३६।६२) सं. १७२२ । शा. १५८८ । का. व. २ दिने । उ० श्री. विनीत-
सागरसंक मु० प्रेमसागरस्योपस्थापना ॥

(३७।६३-६४-७०) सं. १७१३ व. शा. १५८९ वैशा. शु. ४
शनौ० । राजनगरे प. प्रीतिसागरशिव्य मु. चतुरसागर । रूपसागर । कृपमसागर-
प्रमुखाणामटानामुपस्थापना उ. लक्ष्मीविजयगणिभिः कृता ॥

(३८।७१) सं. १७२५ शा. १५९१ मार्गशीर्ष शु. १२ दिने मु. विशेष-
सागरस्योपस्थापना ॥

(३९।७२) सं. १७२८ । शा. १५९४ प. भाग्यसंक मु. हेमसागरोपस्थापना ॥

(४०।७३) सं. १७३० शा. १५९६ आषाढ शु. ९ बुधे मुनि नियसौभाग्य-
स्योपस्थापना ॥

(४१।७४-७५) संवत् १७३२ । शाके १५९८ । आषाढ शु. २ शनौ
मु० केसरसागर मु० आण्डसागरयोरुपस्थापना । श्री राधनपुरनगरे ।

(४२।७६) संवत् १७३६ वर्ष शाके सोल २ प्रवर्तमाने मार्गसिर शु ३ रवौ
प्रातसमण(ये) मु. कि (की) तिंसागर उपस्थापना श्रीदर्भावतिनगरे कृता । शुभं भवतु ॥

(४३।७७) सं. १७३७ वर्ष । शाके १६०३ प्रव० का० व० ३ द्वितीया
गुरो । मु. हंससागरस्योपस्थापना कृता । श्री वटपद्मनगरे ॥

(४४।७८-८६) सं. १७३८ वर्ष । शा० १६०४ प्र. द्वितीय चैत्रसित
४ चतुर्थी शनौ । मु. कपूरसागर । मु. शागसागर । मु. निधिसागर । मु.
चीरसौभाग्य । मु. भाणसौभाग्य । मु. पुन्यसागर । मु. देवसौभाग्य । मु. शांति-

अंक २] सागरगच्छीय साधुओंकी उपस्थितिनामदी [५८]

सौभाग्य । म. विवेकसौभाग्यानामुपस्थापना निहिना प्रभातसमये श्री अहिष्मदावाद
नगरे श्रीपूज्यैः ॥ श्रीरस्तु ॥

(४७।८८) संवत् १७४१ वर्षे शा. १६०७ प्रवर्तमाने का० व० ५ दिने
क० डाहाहस्योपस्थापना कृता श्री राजनगरे श्रीपूज्यैः ॥

(४८।८८-८९) संवत् १७४१ वर्षे शा. १६०७ प्रवर्तमाने माघ वदि
१३ दिने मुनि आणंदसागर मुनि रविसागरस्योपस्थापना कृता श्रीराजनगरे श्रीपूज्यैः ॥

(४९।५०) श्रीस्तंभतीर्थ मुनि रत्नविजयस्योपस्थापना कृता फाल्गुनसितद्वितीयादिने ॥

(४१।९१-९२-९३-९४) संवत् १७४२ वर्षे शा. १६०८ प्रवर्तमाने वैशाख
शुद्धि ६ वार रवौ पं. मानसागरसक्त भाणसागर पं. भाग्यसागरसक्त गंगसागर
पं. जिनसागरसक्त जीतसागर पं. जिनसागरसक्त विवेकसागराणामुपस्थापना कृता
उ० श्रीइन्द्रसौभाग्यगणिभिः श्रीराजनगरे ॥

(४१।९५) संवत् १७४२ वर्षे शा. १६०८ प्रवर्तमाने आ. शुद्धि १०
दिने पं. धीरसागरगणिसक्त मु. दुंगरसागरस्योपस्थापना कृता पत्तनमङ्गे ॥

(५०।९६-९७) संवत् १७४३ वर्षे शा. १६०९ प्रवर्तमाने ज्येष्ठ वदि ३
मुरौ पं. गंगसागरसक्त क०. मेघा मु. भाग्यसागरस्योपस्थापना कृता श्री[?]जपुरे
श्रीपूज्यैः प्रभातसमये ॥

(५१।९८-९९) संवत् १७४४ वर्षे शा. १६०९ प्रवर्तमाने आगो शुद्धि
१० दिने गुरुवारे पं. अमरसौभाग्य ग. सक्त मुनि हर्षसौभाग्य पं. मेघसौभाग्यसक्त
मुनि हीरसौभाग्यस्योपस्थापना कृता महीशानक राधनपुरे ॥

(५२।१००) संवत् १७४४ वर्षे शा. १६१० प्रवर्तमाने रत्नसागर ग०
सक्त मु० रंगसागरस्योपस्थापना कृता कार्तिक वदि ८ अष्टमी दिने काल्पुरे उ.
कांतिसागरगणिना ॥

(५३।१०१) संवत् १७४४ प्रवर्तमाने शा. १६१० प्रवर्तमाने पोष वदि ५
दिने पं. सूरसागरग. सक्त मु. प्रीतिसागरस्योपस्थापना कृता संवायां श्रीपूज्यैः राजपुरे ॥

(५४।१०२-१०३) संवत् १७२२ शा. १५८८ वर्षे चैत्र वदि अष्टमी
दिने सोमवासरे प्रथमप्रहरे श्रीविजयप्रभुरूरिविजयिनी श्रीराजनगरे पं. श्री सौभाग्य-
विजय ग. ना मु. हितविजयतेजविजयस्योपस्थापना कृता ॥

(५५।१०४) संवत् १७२५ वर्षे फाल्गुण शुद्धि ३ दिने उपस्थापना कृता । पं. श्री
सौभाग्यविजयगणिभिः कृता राजनगरे प. विवेकविजयगणिभिः दिव्य मु.रामविजयस्य कृता ॥

(५६।१०५) वर्षे७क्षनेत्रपर्विधुप्रभाते माघम्य शुक्ल दशमी तिश्री च ॥ उपस्थितिः
प्रीतिमतीहिताह्यकवे; दियोज्ञानमुनेः प्रगोडभूत ॥

[३०]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[४८]

(५७।१०६-१०७-१०८) संवत् १७४५ वर्षे ज्येष्ठ शुद्धि ४ दिने प्रथम-प्रहंग शाके १६१२ (१६१०) प्रवर्तमाने राजनगर श्रीपूज्यपार्श्वे उ. श्री बुद्धिसागर ग.भि: कृता उपस्थापना मु. महिमासागर पं. सुखसागर ग. सक्त मु. रामविजय ग. मु. हर्षविजयस्य पं. भाणसागर पं. सक्त. क. केशव एषां त्रयाणां सार्वी श्रीपूज्यैः स्वयमुपस्थापना कृता ।

(५८।१०९) संवत् १७४९ वर्षे आ. शु. १२ उपस्थापना ॥

(५९।११०) संवत् १७४८ वर्षे शाके १६१४ प्रवर्तमाने आसाढ शुद्धि १२ बुधे पं. दयासागरसक्त मु. चतुरसागरस्योपस्थापना कृता दर्भावितिनगरं पाश्चात्यप्रहंगे पं. दयासागर ग. कृता ॥

(६०।१११) संवत् १७४९ वर्षे शाके १६१५ प्रवर्तमाने वैशा. शु. ५ रवौ पं. मेरविजयसक्त मु. रनविजयशक्त(सक्त) मु. दयाविजयस्योपस्थापना कृता पाटणनगरे भ. लक्ष्मीसागरमूरिभिः पश्चात्यप्रहंगे ॥

(६१।११२-११३) सं. १७५१ वर्षे शाके १६१७ प्र. ज्येष्ठ व. १० प्रथमप्रहंगे मु. महिमासागरस्य उपस्थापना कृता उ. श्रीमुंदरसौभाग्यगणिसक्त मु. सुमतिसौभाग्यस्य उपस्थापना कृता शोषपुरे उ. श्रीमुंदरसौभाग्यगणिभिः ॥

(६२।११४) संव. १७५२ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्तमाने वैशाख सुद्धि ३ शुक्रे प्रथमप्रहंगे मु. इंद्रसागरस्योपस्थापना कृता श्रीराजनगर भ. लक्ष्मीसागरमूरिभिः ॥

(६३।११५) संवत् १७२२ वर्षे फाशु. व. ७ दिने शनिवारे पं. सुखचंद्र ग. वि. पं. प्रमोदचंद्र ग. उपस्थापना कृता दिव्य. प्र. राजनगरम. पं. सौभाग्यविजय ॥

(६४।११६) संवत् १७२२ वर्षे वैशाखवदि ६ दिने शनिवार श्रीसीरोहीमध्ये मु. सुमतिविजयस्य उपस्थापना कृना पं. रामविजयगणिभिः ॥

(६५।११७) सं. १७५४ वर्षे शाके १६२० प्रवर्तमाने डि. जे. मु. ३ बुधे मु. ॥

(६६।११८) संव. १७४२ वर्षे मु. कुशलविजयस्य उपस्थापना कृ ॥

(६७।११९) संवत् १७५३ वर्षे शाके १८ प्रवर्तमाने भागमिर वदि १ रवौ मु. कुशलसागरस्योपस्थापना कृता भ. श्री लक्ष्मीसागरमूरिभिः गविपुरं प्रथमप्रहंगे ॥

(६८।१२०) ऐभाग्यस्योपस्थापना कृता वटपटमध्ये उ. श्रीमुंदरसौभाग्यगणिभिः ॥

(६९।१२१) सं. २३ पं. केशवसागरम्यो(स्य) उपस्थापना कृता प्रभाने ॥

(७०।१२२) संवत् १७५३ आ. ५४ वर्षे प्रथम आ. शु. २ पं. सुमति-वीजयसक्त मु. उद्योतविजयस्य उपस्थापना कृता भोतामध्ये ॥

(७१।१२३-१२४-१२५) संवत् १७५६ वर्षे शा. १६२२ प्रवर्तमाने वै. मु. २ बुधे मु. विवेकसागर प्रमोदसागर धीरसागरणामुपस्थापना कृता ॥

पंचपरमेष्ठिनभस्कारनो भ्रमाव आजे छे के नहि ?

लेखकः—पूज्य मुनिमहाश्री श्री लक्ष्मविजयल, अहमहनगर.

आ प्रथनो उत्तर आपनो कहिन छे. शास्त्रोमां पंचपरमेष्ठिनभस्कारनो भहिमा थेण्या भोटो वर्णियो छे. ऐने सर्वमंत्रगतनोनुं उत्पत्ति स्थान कहुं छे. ऐने सर्व शास्त्रोनी आहिमां उच्चारण करवानुं इरभान कर्तुं छे. ऐना एडक अक्षरना उच्चारणमां अनंत कर्मी अने तेना रसनो धात थाय छे, ऐम इरभाव्युं छे. सर्व कागना अने सर्व क्षेत्रना सर्व परमित्यो अने भद्रिंगोने प्रखामद्य छोवाथी यो भद्रामंगल स्वद्यप छे, ऐम लेशोरथी अतिपालन कर्तुं छे. पंचपरमेष्ठिनभस्कृतिने आ लोक अने परद्वाकमां अनेक प्रकारना वांछिते पूरा पाडनार तरीक वर्णिवेल छे. अर्थने आपनार पथु ते ज छे. क्रमने आपनार पथु ते ज छे. अने आशेभ्यने आपनार पथु ते ज छे, अलिगति अने आनंदने आपनार पथु अने ज भानेल छे. परद्वाकमां सिद्धिगमन अथवा हेवद्वाकगमन, अथवा शुभ कुणमां आगमन अथवा ऐधिलालनुं कारण पथु अने ज कहेल छे. सर्व युभनो प्रयोजक अने सुर्व हुँधतो धातक पथु पंचपरमेष्ठिनभस्कार छे, ऐम ते ते स्थगोंगे सादृ शभोमां शास्त्रकार भद्रिंगोने इरभाव्युं छे. तो पक्षी आजे ओथी विपरीत क्रम ? यो प्र०न सहेने उत्पन थाय छे. ऐनो उत्तर पथु भगवान दरिभद्रसुरिण आहि सुरिपुंगवोंगे दपष्ट शब्दोमां आगेले छे. ‘योगपिन्द’ नाभना अन्थद्वाकमां तेओथी इरभावे छे के—

“अक्षरद्वयमयेतत्, थ्रयमाणं विधानतः। गीतं पापक्षयायोच्चैः, योगसिद्धैसहात्मभिः ॥१॥

सिद्धयोगी योवा तीर्थिकृ गणुधराहि भद्रामुरुपोंगे ‘योग’ योवा ए अक्षर पथु विधानपूर्वक सांख्यानार आत्माने अत्यंत पापना क्षय भाटे थाय छे, ऐम इरभावेल छे.

यो ज लोकनी स्वेषज्ञ दीक्षामां तेओथी इरभावे छे के—

“अक्षरद्वयमपि कि पुनः पञ्चनमस्कारावीन्यनेकान्यक्षरागोत्पत्ति शब्दार्थः। एतत् ‘योगः’ इति शब्दलक्षणं थ्रयमाणमाकर्ण्यमानम्। तथाविवार्थाऽनववेषेऽपि, ‘विधानतो’ विधानेन, अद्वासंवेगादिशुद्धभावोहालासकरकुड्मलयोजनादिलक्षणेन। गीतमुक्तं पापक्षयाय, मिद्यात्मेहायकुर्यालकर्मनिर्मलनायोन्नैस्त्वर्यम्। कैर्णीतमिन्याह ‘योगसिद्धैः’ योगः मिद्दो निष्ठानो येणां ते तथा, तैर्जिनगणवरादिभिः ‘महान्मभिः’ प्रशस्तभावैरिति ॥”

‘ए अक्षर पथु’ पंचनमस्काराहि अनेक अक्षरो भाटे तो कहेवुं ज शुं ? ‘योग’ योवा ए अक्षर सांख्यातां, तेवा प्रकारना अर्थनुं ज्ञान न होय तो पथु, विधानपूर्वक ‘अद्वा संवेगादिलावेउद्दासपूर्वक अने ए हुथ आहि ज्ञेयापूर्वक,’ भिद्यात्मभोद्वादीयादी अशुभ कर्मना अत्यंत निर्भुलन भाटे थाय छे, ऐम निष्ठान योगी योवा श्री जिन गणुधराहि प्रशस्त नवभावणा भद्रामुरुपोंगे इरभावेल छे.

भगवान दरिभद्रसुरि भद्राराजनुं उपरेक्ता निदपथु इरभावे छे के श्री पंचपरमेष्ठिनभस्काराहि अनेक अक्षरो नहि किन्तु श्री जिनवयनानुसारी ‘योग’ योवा ए अक्षरनुं अवणु पथु अत्यंत पापक्षय भाटे थाय छे. शरत एटली ज ते विधानपूर्वक हावुं जोधाए, अने विधान एटले अद्वा संवेगादि भानसिद्ध भाव अने कर्तुमवधोजनादिभ

[३२]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष ८

शारीरिक लापार. उपस्थितयथा शुद्ध उच्चारण्य आहि ताचिक किंवा ताचामेकाना अवोपाप विना कायिक, वाचिक अने मानसिक शुद्ध भावोल्लासपूर्वक श्री पंचपरमेष्ठिनमस्काराहि अशरेनुं अथवा पाण्य अति किळाट पापोना क्षयनुं उच्च इरण्य मानेलुं क्षे, तो पक्षी तथाप्रकारना अवोपाध सहित, शुद्ध अने स्पष्ट शब्दोच्चारपूर्वक तेनुं उच्चारण् अथवा मनन अने चिन्तन अने निहित्यासनाहि अत्यंत अशुभ कर्मीना क्षयनुं मदान कारण् अने, तेमां प्रूढवृंज शुं ?

आजे पंचपरमेष्ठिनमस्कार इणीभूत न थेतो होय के तेनो प्रभाव प्रतीनिःश्रव न अनेतो होय, तेमां कारण् तेना अर्थनुं अन्नान के के अद्वा सर्वेगाहिनो अभाव के ? अतो निश्चय उपरोक्त निष्पत्तिमात्री मणी आवे क्षे. तथाप्रकारना क्षयोपशमना अभाव अर्थनो अवगम एकांका वधतो होई शके क्षे, परन्तु ते तेहें आधक नक्षी लेटेलो आधक विधाननो अभाव-अद्वा सर्वेगाहि भावोल्लासनो अभाव क्षे. क्षयोपशमना योजे अर्थावगम अविक पाण्य होय, छतां ले विधान प्रत्ये ऐहकार होय, तो ते इणामासिना ऐनशाय रहे क्षे. सामान्य अर्थोधवान् पाण्य विधान प्रत्ये कालाज्ञवाणो आत्मा पापक्षयादि उच्च इणानो भोक्ता अनी शके क्षे.

आजे नवकारने गणनारा अर्थज्ञानदीनपूर्व तेने गणु क्षे, माटे तेना इणाथी वंचित रहे क्षे, अम फळेवा करतां अद्वासर्वेगशत्यपाण्य तेने गणु क्षे, माटे ज्व इणाथा वंचित रहे क्षे, अम फळेवृं ए शास्त्रदिग्दिग्दो वधारे अनुदृग्म क्षे. अद्वा 'तथेति प्रव्ययः' 'आ तेग ज्व क्षे' एवो विश्वास अथवा 'आ ज्व परमार्थ क्षे' एवी शुद्धि. अने सर्वेग 'मोक्षाभिवाप्ता' अथवा 'आ ज्व आराधन करवा योग्य क्षे' एवुं ज्ञान. भावोल्लास माटे आ ज्ञनिनां अद्वा अने सर्वेगनी परम आवस्यकता क्षे. ज्यांसुधी 'पंचपरमेष्ठिनमस्किया एं ज्व परमार्थ क्षे,' एवी शुद्धि न थाय अने हुःअ अने तेना कारण्यभूत पापथी रहित अनन्या माटे एं ज्व एक परम साधन क्षे, एवुं आंतरिक ज्ञान न थाय, त्यासुधी—“अरिहंत एं आर गुण सहित क्षे अने सिद्ध ए आड गुण सहित क्षे; आड प्रतिदार्थ अने चार मूलानिशय मणाने आर गुण गण्याय क्षे; अशोकवृक्ष, सुरभुजवृष्टि धृत्याहि आह प्रतिदार्थीनां नाम क्षे; अपायापगमातिशय, ज्ञानातिशय धृत्याहि आर मूल अतिशये कळेवाय क्षे; आह कर्मीना क्षयथी सिद्धपरमात्माने आड गुणो उत्पन्न थाय क्षे; आड कर्मीनी उत्तर प्रकृतियो (१४८), सत्तामां (१४८), अंधमां (१२०), उद्यमां (१२२), उदीरण्यामां (१२२) होय क्षे; ग॒८८. उद्य, उदीरण्या अने सत्ता ए चारे प्रकारे कर्मथी रहित होय ते सिद्ध कळेवाय क्षे” अग्र आधी पाण्य पांच परमेष्ठी अने तेमना गुणो संक्षेपी मूलमातिसूक्ष्म ज्ञान धर्यानार आत्मा पाण्य ज्वे ते प्रये अद्वा अने सर्वेगथी शून्य क्षे तो इणामासिनो कर्त्ता आन्यिकानी क्षे. तथाप्रकारना क्षयोपरामाहि सामग्रीना अभावे “अरिहंत परमात्मा ए भोक्षमार्गाना उपहेशक क्षे; सिद्धपरमात्मा ए भोक्षने प्राप्त अपेक्षा क्षे; भोक्ष ए अनंत सुखनुं धाम क्षे, ज्ञनमरण्याहि के भूषत्पाहि भीडांसानुं त्यां नामनिशान नक्षी; हुःअनुं स्थान चार गतिहाय संसार क्षे; आवि व्यावि अने उपाविधि ते भरपूर क्षे; ज्यांसुधी ए संसारपरिभ्रमणे भटे नहि त्यांसुधी हुःअनो अंत आवे नहि; अरिहंत परमात्माएवो डेवण्यानया ते नेवुं क्षे; पांत च्यपुरुषाग्रंथा

॥२॥

पंचपरमेष्ठिनमस्कारना प्रकाश आजे हे के नहि?

[३३]

कर्मरहित अन्या हे; जीवनेवाने कर्मरहित अनवानो मार्ग अतावी गया हे; एवे मार्ग चालनार पूर्व हुःअरहित अन्या हे, आजे पण हुःअरहित अने हे; अनंत सुखना भोक्ता पण तेजो ज थया हे अने थाय हे; एवे मार्गनी अद्वाना अलावे ज अन्या चारे गतिमां हुःअ अनुभवी रुखा हे; हुःअनाश अने सुखप्राप्तिनो पारमार्थिक उपाय शरिदंतो ज स्वयं जाणी शंक हे; जीवनो तेमना कडेवाथी ज जाणी शंक हे, अशिदंत हे सर्वज्ञ अन्या सिवाय जेओ सुखप्राप्तिनो मार्ग अतावे हे तेजो अधिय नथी, तेवा अमूर्ख जानीना अतावेला मार्ग चालवामां अद्वय हे; संगूर्ख जानीज्ञ अतावेला मार्ग नालागां ज अद्वय हे; जानीज्ञ अतावेला मार्ग कष्टपूर्ख हेय तोपणु आहरणीय हे; अगानी अगर अद्विरा जानीज्ञ अतावेला मार्ग सुखावो हेय तोपणु अनाहरणीय हे; समरत हुःअनो जेमां सदाकाळाने माटे अंत हे एवा भोक्तो भेगवता माटेनो मार्ग अुभावो हेघ शंक ज नहि, अधिक कष्टथी अव्यवा माटे अद्वय कष्ट एवे कष्ट गण्याय ज नहि; संचारनां द्वियुक सुणो पणु कष्ट विना भग्नी शक्तां नथी तो भोक्तना अनंत सुणो विना कष्ट अगर आतां भीतां भग्नी अन्य एम मानवु एवे आविशता हे”—ऐट्टु जेओ जाणे हे, अद्वा एवे संवेग अरपूर विचारो जेता अंतरभां रथान जमावीते ऐटेला हे ते आत्मांजा ज पंचपरमेष्ठिनमस्कारकियाना वथार्थ इग्ना उपलोक्ता अनी शंक हे.

अर्थज्ञान मध्या पक्षी अद्वा संवेगनी शी जइ? एम कडेवार तत्त्वने समज्ञयो ज नया. अर्थज्ञाननी साथे अद्वा संवेग धृत्याहि ज्यांसुधी न मणे त्यांसुधी ते किया भजन किया अनी शक्ती नथी. शास्त्रकारोज्ञे ‘आव’ने ज सर्वव इणाड्या मान्यो हे. ‘आव’ उपयोग शब्द हे, उपयोग विनानी अर्थज्ञान सहित अने शुद्ध कियाने पणु शास्त्रकारोज्ञे दृव्य किया कडेली हे. ‘अनुपयोगो द्रव्यमिति वचनात्।’ ‘अनुपयोग एवे ज दृव्य हे,’ एम शास्त्रानु इत्यान ए. उपयोगवाणानी अशुद्ध अगर अर्थज्ञानहीन किया पणु भावकियानुं कारणु अनी शंक हे. एथी विपरीत उपयोगशून्यनी शुद्ध अने अर्थज्ञानवाणी किया पणु भावकिया के तेवुं साक्षात् धारण अनी शक्ती नथी.

उपयोगनी आटली प्रधानता जेम धर्मकियामां हे तेम प्रत्येक सारी नरभी कियामां हे. अनुपयोगे थेलो अपराध संसारमां के सरकारमां पणु सुख्य अपराध गणातो नथी तेम विना उपयोगे थेलु सांतुं कार्य पणु संसारमां सांतुं के प्रशांसनीय गणातुं नथी. धतर दर्शनकारोज्ञे पणु कहुं हे के:—‘मन एव मनुष्याणां कारण बन्धमोक्षयोः’ ‘मनुष्योनुं मन एव अंध अने भोक्तनुं धारण हे.’ मन जेमां भग्नतुं नथी, एवे किया एम भोक्तनो हेतु थती नथी, तेम अनंदनो हेतु पणु थती नथी.

मनश्वन्यपणु के उपयोगशून्यपणु थती पंचपरमेष्ठिनमस्कारकिया पणु, तेवुं सारु अने वथार्थ इण्ठ डम आपी शंक हे? एवे कियानी साथे मनने भेगवता माटे अर्थज्ञाननी जेटली जइर, हे, तेथी डैध गुणी अधिक जइर अद्वा अने संवेगनी हे. अद्वा एवे संवेगवाणा तथा पंचपरमेष्ठिनमस्किया प्रत्ये लकित अने आहरवाणा पुण्यवंत ल्लो अत्यद्य अर्थज्ञानने धारण करवा इतां तेनाथी जे फायदो आजे अगर डौध पणु जेवे उडानी शंक हे ते इग्न अद्वा संवेग लकित अने आहराद्विथी शून्य मेटा तत्त्ववेता अने पंडितायणी तरीक लेखाताज्ञा पणु भेगवी शंक तेम नथी.

[६४]

આ જૈન સત્ય પ્રકાશ

[વર્ષ ८

પંચપરમેણિનમસ્ક્રિયાનો પ્રભાવ એ રીતે અત્યંત લારી હોવા છતાં પણ તેના ઇન્દ્રિય વંચિત રહી જવાનું સુખ્ય કારણું કાર્ધ હોય તો તે અદ્ધારીનતાહિ છે. અદ્ધારીન આત્માના હાથમાં આવેલો નવકારદ્દીપી વિનતામણિ નિષ્ઠળ ગાય અગર તુકસાન કરનારો થાય તો તેમાં દોષ નવકાર કે તેના પ્રભાવનો છે, એમ કેમ કઈ શકાય? અનવિકારી આત્માઓને સારી પણ ચીજ આપવાની પરોપકારદત સત્તુરૂપો સ્પષ્ટ શબ્દોમાં ના પણ છે. પરમોપકારી ભગવાન હશિલદ્રસુરિ મહારાજ જ એક સ્થળે કરમાવ છે છે—

“ નૈતદિવિદ્વસ્વયોગ્યેભ્યો દવદ્વેને તથાપિ તુ। હરિમદ ઇંડ પ્રાહ, નૈતોઽં દેય આદરાત. ॥ ૧ ॥ ”

ઉત્તમ વસ્તુના માલાત્મયને જાળુનારા સત્તુરૂપો અયોગ્યને ઉત્તમ વસ્તુ આપતા જ નથી. તોપણું ‘હશિલદ્ર’ આદરપૂર્વક જખ્ખાવે છે કે-કૃપા કરીને ઉત્તમ વસ્તુ અયોગ્યને આપતા નહિ.

કારણું કે ઉત્તમ વસ્તુની કરેલી જ્વલય પણ અવૃત્ત મોટા અનથને માટે થાય છે. એ અનથથી અચ્યવાને માટે જ મારું આ કથન છે. નહિ કે મને કાઢના પ્રત્યે માત્સર્ય છે. યોગ્ય અને અવિકારી આત્માઓને તો તે પ્રથતન પૂર્વક આપવી જનન્દગી. પરન્તુ તેમાં પણ વિધિ જાળવવાની અત્યંત જરૂર છે. અયોગ્ય વિધિએ અદ્ધાર કરનાર યોગ્ય આત્માને ઉત્તમ વસ્તુ પણ એકાઓએક ઇણીભૂત થતી નથી. તુકસાન કરનારી પણ થઈ પણ છે.

શ્રીપંચપરમેણિનમસ્કારના સાચા અવિકારી અદ્ધારસંગાહિ ગુણ્યથી વિભૂપિન પુરુષદલો છે, પણ તે સાચું હો, સાધ્યો હો, આવક હો, આવિકા હો કે ભદ્રક પરિણામી મિથ્યાદાણિ હો. ઉપયાનાહિ તર્ફ કરવા પૂર્વક, શ્રી મહાનિશાયાહિ સૂર્યોના યોગ્યાદ્ધિન કરનાર સંયમી, શુદ્ધ ચારિકના ખરી અને શાસ્કોકન વિધિ-વિધાન પ્રત્યે પરિપૂર્ણ આદર ધર્મવાનારા નિર્ણયન્થ સુનિરાજના સુખ્યથી અદ્ધાર કરેલો નવકાર એ જ વિધિપૂર્વક અદ્ધાર કરેલો ગણ્યાય છે.

એ રીતે વિધિ પૂર્વક અગર વિધિ પ્રત્યે સંપૂર્ણ આદર ધારણ કરી, અવસર મળ્યે એ વિધિને સત્ત્યાપિત કરવાની ધારણા ગાંધી અદ્ધાર કરવાનાંનો આત્મા, નવકારદારા યંત્રેષ્ટ ફળ ન મેળાવી શકે એ અને જ નહિ.

આજના વિપત્તકાળમાં મંગળ માટે, વિધનવિનાશ માટે, ચારે આળુ અને હરો દિશાએથી મોઢું કારીને ડોકીયાં કરી રહેલાં હુંઘડીયી પિશાચ્યાના સુખની અંદર કુદ જન્તુની જેમ પીસાતાં અચી જવા માટે શું કાર્ધ પ્રયત્ન સાધનની જરૂર નથી? પ્રત્યેક વ્યક્તિ માટે, સ્વી-પુરુષ માટે, બાલક-આવિકા સર્વને માટે એવા સાધનની અનિવાર્ય જરૂર છે. અને એવું પ્રયત્ન સાધન, અમોધ સાધન, સર્વ લોયોની સામે આત્માને સુરક્ષિત અનાવનાર અને સર્વને એક સરખું ઉપયોગી થઈ પડે તેણું સાધન શ્રીપંચપરમેણિનમસ્ક્રિયાથી ચહીયાતું બીજું કયું છે? હોય તો તેને અપનાવવાની જરૂર છે. ન હોય તો ધુમાડમાં આચાર ભગવાની જરૂર નથી. મધ્ય દર્શિયામાં કુલ્યતી વેળા તણુખલાને વળું અચી શકાતું નથી,

દુઃખસાગરમાં કુલ્યતી દુનિયાને અચારી લેવા અને સુરક્ષિત સ્થળે પહોંચાડી હેવ. શ્રી નવકાર સમાન બીજુ કાર્ધ ‘Life boat’ છવનાય નથી. નાય પણ તેમાં એસનારને જ અચારે છે, આજને નહિ. તેમ નવકાર પણ તેના આરાધકને અચારે, અનારાધક કે તિરાખકને ન અચારે એમાં કોનો દોષ? શ્રીનવકારનો નહિ.જ.

प्रवचन-प्रश्नमाला।

प्रयोगक-पू. आचार्य महाराज श्री विजयपद्मसुरिण

(क्रमांक ८४ थी यात्रु)

८७ प्रश्न—यौद्ध विद्यानां नाम क्यां क्यां ?

उत्तर—१ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ छंद, ५ ज्योतिःशास्त्र, ६ निरूपित, ७ गुणवेद, ८ युजुर्वेद, ९ सामवेद, १० अथर्ववेद, ११ भागवांसा, १२ आनन्दाक्षिणी, १३ धर्मशास्त्र, १४ पुराण. श्री धृष्टद्वाति वगेरे आलेखो एवं यौद्ध विद्याना ज्ञानकार इता, इतां एवं ज्ञान सम्बद्धत्वं विनानुङ्गोवाथी सम्यग् ज्ञान न क्षेवाय. श्री आर्य रक्षित-सुरिण महाराज पण्डित यौद्ध विद्याना पारगामी इता. एवम् परिशिष्टपर्वमां श्री लेमयंदसुरिण महाराजे ज्ञानाभ्युङ्गे छे. यौद्ध विद्यानां नाम अभिधानचित्तमणिमां ज्ञानाभ्यां छे. ८७.

८८ प्रश्न—भीजन अथेमां १८ विद्याओ ज्ञानावी छे. ते कृष्ण कृष्ण समजनी ?

उत्तर—उपरेता १७मा प्रैनना उत्तरमां १४ विद्याओ ज्ञानावी छे तेमां याद उपवेहनां नाम आ प्रमाणे ज्ञानाभ्युङ्ग—१ व्याख्यर्वेद, २ धनुर्वेद, ३ गांवर्व, ४ अर्थशास्त्र. आ अप्ना विषष्णुभूत्याणाहिमां विस्तारयी ज्ञानावी छे. ८८.

८९ प्रश्न—यौद्ध विद्यामां पहेली विद्यानुङ्गो ज्ञानाभ्युङ्गे ते शिक्षा अटले शुं ?

उत्तर—जे अंथ अक्षरोना आमनाय (परंपरा) ने ज्ञानवे ते शिक्षा क्षेवाय. ८९

९० प्रश्न—कल्प अटले शुं ?

उत्तर—जे अंथ अलाहिना विधिने ज्ञानवे ते कल्प क्षेवाय. ९०

९१ प्रश्न—व्याकरण अटले शुं ?

उत्तर—जे शप्तेना स्वदृप्ते ज्ञानवे ते व्याकरण क्षेवाय. आनु भाजुः नाम ‘शब्दशास्त्र’ क्षेवाय छे. भाषाशुद्धिने भाष्ट अने संस्कृत ग्रन्थ पद्ध अंथेना रहन्त्यने ज्ञानावाने भाषे व्याकरणशास्त्रो अन्यासाहि द्वारा ज्ञ०३२ परिचय कर्वो नेछाये. व्याकरणोना ज्ञानी भीजन महानतना रक्षणातो पण्डि लाल भणे छे. श्री अनुयोग द्वारमध्य सूत्रमां पण्डि तद्वित, समासाहितुः स्वदृप्त अताभ्युङ्गे ते रीते प्रश्नव्याकरण नामना हसामा अंगमां पण्डि क्षेवुङ्गे ते, व्याकरणानुङ्गो ज्ञान संयमनी साधनामां अपूर्व महदगार छे. ९१

९२ प्रश्न—छंद अटले शुं ?

उत्तर—जे अंथ पद्धरन्यनानुङ्गे स्वदृप्त ज्ञानवे ते छंदोअंथ क्षेवाय. ९२

९३ प्रश्न—ज्योतिःशास्त्र अटले शुं ?

उत्तर—जे अंथ अलाहिना स्वदृप्ते ज्ञानवे ते ज्योतिःशास्त्र क्षेवाय. ९३

९४. प्रश्न—निरूपित अटले शुं ?

उत्तर—जे अंथ वर्णाग्रमाहि स्वदृप्ते शब्दतुः वर्णन करे ते निरूपित क्षेवाय. आ रीते वेदनां शिक्षाहि ६ अंगानी व्याख्या संक्षेपमां ज्ञानावी हीधी. ९४.

९५. प्रश्न—भीमांसा अटले शुं ?

उत्तर—भीमांसाशास्त्रना एवं भेद छे, ते आ प्रमाणे ज्ञानावा : १ पूर्वभीमांसा अने उत्तरभीमांसा. पूर्व भीमांसा. धर्मकाउनी अप्ना ज्ञानावी छे, ते उत्तर भीमांसामां ज्ञान-स्वदृप्तुः वर्णन क्युङ्गे छे. ९५.

[६६]

श्री लैल सत्य महाकाश

[चर्चा ८

६६. प्रश्न—आनन्दिक्षिकी ऐटले थुं ?

उत्तर—श्रीगौतमऋषि वजेशेंगे अनावेला, तर्हना स्वदृपते जखावनारा न्याय शास्त्रोना समुदाय ते आनन्दिक्षिकी कहेण्याय. ६६.

६७. प्रश्न—१४ विद्यामां धर्मशास्त्र गण्यात्युं क्षे. धर्मशास्त्र ऐटले थुं ?

उत्तर—धर्मशास्त्र ऐटले मनुऋषि वजेशेंगे अनावेल ने समितिशास्त्र. ६७

६८. प्रश्न—अगार पुराणां नाम क्यां क्यां ?

उत्तर—१ अन्नपुराण, २ यज्ञपुराण, ३ विष्णुपुराण, ४ वायुपुराण, ५ आग्नेय पुराण, ६ नारदपुराण, ७ मार्कोट्यपुराण, ८ आग्नेयपुराण, ९ अविष्णुपुराण, १० अक्षविवर्तपुराण, ११ विंश्पुराण, १२ वशदपुराण, १३ रक्षपुराण, १४ वामपुराण, १५ भत्यपुराण, १६ दूर्मिपुराण, १७ गरुडपुराण अने १८ अन्नाडपुराण. आ रीते १८ पुराणां नामो श्रीकृष्णसन्ती हपिकामां जखाव्यां क्षे. ६८.

६९. प्रश्न—क्यां क्यां कारण्याथी शेगनी उत्पत्ति थाय क्षे ?

उत्तर—नव कारण्याथी शेगनी उत्पत्ति थाय क्षे ते आ प्रभाणे जखाव्यां : १ अंडक आसने धरणीवार ऐसी रहेण्याथी अथवा ६६ उपरांत आहार करवाथी रोग थाय. २ गोतानी प्रदृतिने प्रतिकूल विषम आसने ऐसतां अथवा अहितकारी आहराहि करतां अथवा अशर्णु छतां लोजन करवाथी रोग थाय. ३ धरणे टाईम निद्रा देतां रोग थाय. ४ धरणे नगवाथी रोग थाय. ५ इक्का (मस) नी आधा शेक्तां रोग थाय. ६ पेशायनी आधा शेक्तां रोग थाय. ७ शेन उपरांत चालतां अथवा खुलू ९ वेगमां चालतां रोग थाय. ८ टाईम-टटाईम भोजन करवाथी अथवा प्रदृति विरुद्ध भोजन करतां रोग थाय. अने ६ शिंद्योना प्रदापने लधते रोग थाय ऐटले शरीराव्याने लधते शरीरमां भयंकर क्षय वजेवे रोग प्रकटे क्षे. आ रीते नव कारण्याथी शेगनी उत्पत्ति थाय क्षे अस समदृने धर्मात्मागि भव्य श्वेतो ते नव कारण्याथी अलग रहीने पदम उद्दलासयी श्रीनिवासर्थमां सात्त्विकी आराधना करीने मानव जन्म सद्दल करवा. विशेष यिना—श्री स्थानांगसूत्रवृत्ति, आवक्षमंजनग्रिकादिमां जखाव्यी क्षे.

१००. प्रश्न—मृतनी अने झाडानी आधा धरणे टाईम शेक्तां क्यों रोग थाय ?

उत्तर—मृतने धरणे टाईम शेक्तां आंभमां हरवे ने झाडानी आधा शेक्तां अचानक मरण वजेवे रोग थाय. विशेष यिना श्रीश्योधनिकृतिमां जखाव्यी क्षे. १००.

१०१. प्रश्न—झाडने वैद्यकना अथेभां रोगेनां ३ कारणो कळां क्षे, ते क्यां क्यां ?

उत्तर—१ धरणुं पाणी पीवुं. २ विषम ऐटले आडा-भिड्यावाणी जग्याए सूनुं, ऐसतुं वजेवे करवुं अथवा प्रदृतिने अगाडे तेवो आहार करवा. अडीं राजरसी आहार तथा तामसी आहार पणु अहरु करवा. ३ हिवसे विना कारणे वधावे डांववुं. ४ रीते यिनां कारणे वधावे जगवुं. ५ पेशायनी आधा शेक्ती. ६ झाडानी आधा शेक्ती. १०१.

१०२. प्रश्न—वैद्यकशास्त्रोमां वैद्यना १५ गुणो कळां क्षे, ते क्या क्या ?

उत्तर—१. काल ऐटले असरने गारभवा. २. मीठी वाणी. ३. स्वबावमां शाति ४ अलारथा शरीरादिमां चौमाजाश, ते अदृश्या परिव ऐटले जेवुं हिव चोभाऱ्युं होय. ५. वैद्यकशास्त्रो अब्यास सहित अनुभव. ६. धैर्य. ७ धर्मपर्यायणुता. ८ शेजनुं निहान

अंक २]

प्रथम - प्रश्नमाला

[३७]

करवागां (गुरु अरण्य शेषाधारामां) हृशियारी. ६ शेगनो प्रगोग (सातु रिथति) गारभनागां कुशलपण्डि. १० संतोष. ११ हवा. १२ मरणु पथाराम्य सूतेला हरहीने आश्वासन आपवु. १३ हरहीना मरणु समयने जाणुवो. १४ सत्यवचनाहि गुणोने धारणु करवा. १५ शेगनी हवा नक्की करीने शेगनो छलाज करवामां सावधानी. आ पंहर गुणोने धारणु करनार वैद्य उत्तम गण्डाय छे. भीजन केटलाङ्गे अथेमां टूंडमां पांच गुणो 'पणु जल्लाया' छे ते आ प्रमाणे-१ आयुर्वेदो अल्यास. २ शेगना निहानाहिनु शाल. ३ ज्ञेते देखतां प्रेम उपने. ४ धार्मिक दृष्टिये अने आवल्लारिक दृष्टिये लाल तरइ लक्ष्य राख्नु, एटके हवा करतां डोध डेकाणे अर्थनी प्राप्ति, डोधक डेकाणे यशःकीर्तिनो लाल, डोधक डेकाणे धर्मनी प्राप्ति एटदे हरहीनी स्थिति जारीने शी वगैरे लेपी-आ हकीकतने जाणुवी. ५ अदारथी अने अंहरथी प्रसन्नता. जे आ पांच गुणोने धारणु करे ते वैद्य क्लेवाय. उत्तम वैद्योने २ अराय पोशाक, ३ कठोर प्रदृष्टि (स्वभाव), ४ अभिमान, ५ ज्ञान धन भणे त्यां ज्ञानो रथाव, ६ जोकाया विना हरहीना धंर ज्ञान-आ पांच दोप्रोनो त्याग करवो नंदेश्वर. वैद्यको धर्म भूमिवरो न ज करी शके, पणु सातु समुदायना रक्षणाहि तरइ लक्ष्य राख्नोने परम शीतार्थ श्री आचार्याहि भद्रापुरुषों आयुर्वेदो अनुभवी जहर थवु नेम्नो. आवा आवा अनेक मुद्दाओने लक्ष्यमां धने पूर्व श्री गणुधर हेवोये 'आरमा आण्याया' नामना पूर्वमां आयुर्वेद (चिकित्साप्रक्रिया)नी संपूर्ण अने रपण्ठ भिना ज्ञानावी हती. तेमज श्री स्थानांगसूतना नवमा अध्ययन वगैरे शास्त्रोमां शेगनां नव कारणो वगैरे भिना ज्ञानावी छे. पूर्व श्री सिद्धर्षिगण्डि भद्राराजनो पाल श्री उपमितिभवप्रपञ्चा कथामां वैद्यकनी दूँक भिना ज्ञानावी छे. द्रव्य वैद्य अथवा द्रव्य वैद्यको अनुभव आ लवमां शेडा अशे धर्मीराधनाहिमां भद्रकार दोहां शके, पणु भयोभवमां अपूर्व सुखने हेनार तथा जन्माहिनी उपाधिने तो टाववाने समर्थ भाववैद्यको अनुभव छे. १०२. (यातु).

“अरिहन्त-चैत्य” शब्दका अर्थ

[एक विचारणा]

लेखक

पृ. आ. म. श्री. विजयमलविधसूरीश्वरजीशिंघे

पूर्ज्य मुनिमहाराज श्री. विक्रमविजयजी

“स्थानकवासी जैन” पत्रके ता. १९-१०-४१ के लेखमें प्रत्यालोचक मैलाना निवासी रतनलाल डेसी लिखते हैं कि—“ठाणाङ्ग वृत्ति तथा वृहत्-कल्पभाष्यके स्पष्ट प्रमाण अंबे खालकर पुनः देख ले” इत्यादि। इस विषयमें जानना चाहिय कि वृहत्कल्प में भी ‘चैत्य’ शब्दका अर्थ ‘अर्हदप्रतिमायां देवविम्बे’ इस प्रकार किया गया है और स्थानांगमें

भी टीकाकारोंने 'चैत्य' शब्दका अर्थ 'साधु' किया ही नहीं है। जहां "क्रह्णाणं मंगलं चेत्यं" इत्यादि वाक्य उपलब्ध है वहां पर भी चैत्य शब्दका साधु अर्थ नहीं है, क्योंकि इसी वाक्यमें पृथक् श्रमणपद गृहीत है, इसलिये चैत्य शब्दका अर्थ साधु करे तो पौनरुक्त्य दोष आ जायगा। मालुम पड़ता है पेसी अपार्थ कल्पनासे हो सदवस्तुमें भी सूर्तिविरोधियोंकी बुद्धि मलिन हो जाती है। वहां तो चैत्य शब्द प्रतिमावाची ही है। साधुको सर्वकल्याणस्वरूप सर्वमंगलस्वरूप सर्वसेव्य भगवत्सूर्ति स्वरूपसे वर्णन किया गया है। बौद्धोंके यहां कुछ भी हो परन्तु अमरसिंह बौद्ध है और उसने अमरकोषमें चैत्य शब्दका अर्थ कहते हुए चैत्यमायतनं तुल्ये पेसा बतलाया है और ज्ञानके पर्यायोंको बतलाते हुए चैत्य शब्दका उपादान नहीं किया है। अगर उनको चैत्य शब्दसे बुद्धि अभिप्रेत होती तो पर्याय रूपसे जहर रखते। पेसे ही मुनिके पर्यायोंमें भी चैत्य शब्द नहीं है।

[पृ. २३] यक्षके चैत्य न कहा और [प. पृ. ३३] गौणतासे भले ही यक्षके चैत्य भी लिये जाय तो कोई हरकत नहीं। इन दो वाक्योंमें मन्दबुद्धिकी दृष्टिमें बदतोव्याघात दोष दिखलाई देता है, न कि चतुरबुद्धिवालेको। 'उपचारसे 'चैत्य' शब्दसे 'यक्ष' कहा जाता है' पेसा अगर सूरजीका अभिप्राय हो तब बदतोव्याघात हो सके परन्तु पूर्व वाक्य यक्षाश्रित है उत्तर वाक्य यक्षायतनसंभवाश्रित है तो किसी प्रकारसे बदतोव्याघात है ही नहीं, और हमारे टीकाकारोंने भी चैत्यं :संज्ञाशब्दत्वात् देवताप्रतिविव्ये प्रसिद्ध ततः तदाश्रयमूर्त यद देवताया गृहं तद्व्युपचारात् चैत्यं तच्च इह व्यंतरायतनं ब्रह्मत्वं इत्यादि स्वप्से यक्षायतनके उपचारसे ही चैत्य कहा है।

'अन्यतीर्थिकपरिगृहीतअरिहंतचैत्यानि' पेसी यंकि है। इस पंक्तिका अर्थ—“जैनत्वसे अरु होकर अजैन बना जाना। अन्य तीर्थके सिद्धान्तको अपना लेना”—यह मुख्य अर्थ है पेसा प्रत्यालोचक लिखते हैं। वे शब्दार्थसे अनभिज्ञ हैं अतः मुख्य अर्थकी उपेक्षा कर अर्थात् अर्थको मुख्य बनाते हैं। अन्यतीर्थिकेन परिगृहीतानि-अन्यतीर्थिकपरिगृहीतानि, इसके सिवा दूसरा कोई समास नहीं हो सकता है, तो अन्यतीर्थिक है कर्ता, कर्म है चैत्यानि, तो 'अन्यतीर्थिकसे परिगृहीत अर्हदचैत्य' ही 'शब्दार्थ होता है। असतिवाधके इस अर्थको छोड़कर अन्य अर्थकी स्वकपोलकल्पना स्वमुखप्रेक्षि जनोंके लिये ही मान्य हो सकती है, न कि शास्त्रमर्यादावेत्ताओंके लिये। परं ए अर्थ तो इसका “अन्यतीर्थिकपरिगृहीतन्वोपलक्षितार्हदचैत्य” अथवा “अन्यतीर्थिकपरिगृहीत अर्हद चैत्यत्वविशिष्ट व्यक्ति” अथवा “अन्यतीर्थिकपरिगृहीतार्हदचैत्यत्वोपलक्षित व्यक्ति” किं वा “अन्य तीर्थिकपरिगृहीतन्वविशिष्ट अर्हद चैत्य” इस प्रकार लब्ध अर्थको आर्थिक कह सकते हैं। इन चार अर्थोंमें दो अप्रसिद्ध हैं, पक वंदनोय है और पक निषेधनीय है। निषेधनीय

अंक २]

“अरिहन्त - वेत्य” शब्दका अर्थ

[३८]

पक्ष ही सूरिप्रोक्त है, तुम्हारा अर्थ कपोलकल्पित ही है। अर्थापत्तिको पूर्व लेखमें दोषरूपसे तुमने कहा है। उस अर्थापत्तिके सिवा तुम्हारा मुख्य अर्थ उक्त शब्दोंसे किसी प्रकार नहीं निकल सकता, अतः तुम्हारा लेख मूल विना की शाखा जैसा है और सूरिजीने अन्यवृथिकपरिगृहीतका अर्थ अन्य तीर्थि द्वारा पकड़ा जाना लिखा है वह बराबर है। अमोलख ऋषिने भी उपाय पूर्ण २५ में “अन्य तीर्थियोंने (से) ग्रहण किये जैनके साधु” ही लिखा है, इसलिये पूर्ण गुरुदेवका अर्थ, जैसा तुम्हारी समाज करती आई है ऐसा हो है, केवल “जैन साधु” इस अंशमें भेद है। “जैनत्वसे धृष्ट होकर अजैन बन जाना” ऐसा मुख्य अर्थ करना बिलकुल व्याकरणकी अनभिज्ञताको बतलाता है। यहां पर ‘परिगृहीत’ शब्दका प्रयोग है इसलिये ‘अन्य तीर्थिकोंसे ग्रहण किया गया’ यही अर्थ हो सकता है। अन्य तीर्थिकपरिगृहीत अरिहन्त चैत्यके वंदन और नमनके निषेधसे मिश्रित और सम्यग्गृह्णि परिगृहीत अरिहन्त चैत्यके वंदनादिकी विधि स्पष्ट होती है। यहां चैत्य शब्दका अर्थ ज्ञान या साधु नहीं बन सकता है। यदि ज्ञान अर्थ हो तो अरिहन्त चैत्य शब्दसे अर्हद् ज्ञानका लाभ होता है, उसका वंदन और नमन असंभव है और उस ज्ञानका अन्य तीर्थिकोंसे परिग्रहण नहीं हो सकता है। परिग्रहण मूर्त पदार्थ साध्य है अन्यथा जिस तरह अन्य तीर्थिकोंका वंदन आदिका निषेध किया है ऐसे ही अन्य तीर्थिकज्ञानादिका निषेध भी करते। एवं साधु अर्थ भी चैत्य शब्दका नहीं बन सकता है। ज्ञानकी मुआफिक वह भी अन्य तीर्थिकोंसे परिगृहीत नहीं हो सकता है। यदि हो भी जाय तो जब तक अपनी साधुतामें स्थिर रहें तब तक स्वतीर्थिक ही है तो अवन्दनीय न होगा। यदि साधुतासे भ्रष्ट है तो अन्यतीर्थिक हो गया, इससे उनका संग्रह अन्यतीर्थिक पदसे हो जाता है। और साधुपर्यायमें चैत्य शब्दका कहीं पर भी आमतौरसे व्यवहार नहीं होनेसे चैत्य शब्दका अर्थ साधु नहीं हो सकता है, किन्तु प्रतिमा ही है। अन्य प्रतिमाओंका वारण करनेके लिये अरिहन्त पद दिया गया है और चैत्यपदका अर्थ यदि साधु किया जाय तो केवल ‘चैत्यानि’ ही बोलना चाहिये और अरिहन्त पद निरर्थक हो जाता है। “अन्य तीर्थिक साधुका ग्रहण न हो इस लिये अरिहन्त पद सार्थक है” ऐसा कहना अनुचित है, क्योंकि शास्त्रदृष्ट्या वह चैत्य शब्दका वाच्य नहीं होगा। जहां कहीं शास्त्रमें अन्यतीर्थिक साधुका ग्रहण करना पड़ा वहां पर शास्त्रकार श्रमण शब्दसे बोले हैं न कि चैत्यशब्द से। इससे भी चैत्य शब्दसे अन्य तीर्थिक साधुका बोध नहीं कर सकते हैं। तथा च अरिहन्त पद निरर्थक ही रहेगा, किंच वह साधु आहंत दृष्टिसे असाधु होनेसे अन्य तीर्थिक शब्दसे ही आ जाने पर तद्व्यावृत्तिके लिये भी अहंत पद नहीं हो सकता है। अतः अरिहन्तचैत्यानि पद घटित चैत्य शब्दका किसी तरहसे साधु अर्थ नहीं हो सकता है, किन्तु प्रतिमा अर्थवा अहंदायतन ही होगा।

(क्रमशः)

जैनधर्मी वीरोनां पराक्रम

श्री लेखकः—श्रीयुत मोहनलाल हीभवं ह चैकसी
(गतांकथी चालु)

भृष्णावतोनी चडती-पडतीः मंत्री कृमचंद (५)

रायसिंहना मृत्यु पट्ठी शीकानेहनी शाही पर हवपतसिंह आयो. पशु गोने राज्य-काण लगभग ऐ वर्ष सुधीज चाल्यो. राज अटपटना आंदोलनो चालु रखां अने सन १९१३मां सुरसिंग राजगाही पर चढी ऐसी. भरणुक्त्तु पिताओ ने अलिकापा अणुभूरी अतावी हती ऐ अना मनमां रमतीज हती, ए माटे डेवण तक भगे ओटलीज दीव हती. लाग भगतांज व्योडा हायाने अवी तैयारी अंदर आनेथी चालु हती. राज तरीक नहेह थथा पट्ठी ऐ सौ प्रथम हिल्ली गयो. ए पाण्डा तेना मनमां ओक झाँके ऐ पक्षी मारवा'नो इचिह्ने हतो. ओक तो 'आदशाहेन तवा राज्यी तरीक सदामी भगवानो अने अीने अचावतना वारसोने समजावी शीकानेमां पाण्डा लाववानो. आ वेळा क्वाणे यारी आपी अने भुरसिंह पोताना धराहामां छायो. 'विधिती गति न्यारी छ' ए नीतिकार्यु कथन अनुलवसिंह छ. 'हगलआज हुना नमे' ए उठित अनुसार राज 'पोतानु' प्रथम कार्य पतावी अचावतना रहेहाणे पहेचायो. 'मुवु तिप्रति जिह्वाये हृदये तु हलाहलम्' नेवा वृत्ति धारणु करी ओखु लागचंद अने लक्ष्मीचंद समक्ष ओक चुनांहा आछगर तरीक अंगो तो भाव लक्ष्यो डे, भोगु भाष्टु जगामां इसाय तेम, ते उल्य राजना आवा वर्त्तनथा मोहाई गया अने भरणुपथारी परथी पिताओ आपेक्ष शिक्षा विसरी गया. उल्य अंधुओने पोतानी शेतरजना खादा अनता नेह, सुरसिंग मनमां मलकावा लावयो अने तेओाओ ने जलनां वचन मांज्यां ते आपवामां पाढी पानी न करी. ए उल्यना हिलमां वसवसानुं दीधुं पशु रहेवा न पामे तेवी हैरेक आतरी आपी, पोतानी आथे ओकानेर पाण्डा इरवानुं चोइकु गेहांही दीधुं.

आ उपरथीज भवितव्यतानुं अगवानपथं पुरवार थाय छ. तेम न छेण तो कृमचंद मंत्रीनी सूचना आटबो जलही भूली ज्वात भरी ?

पोताना वंशनो मान भर्त्यो पूर्ववत् जगावाशे अवा भरीसाथी लोभायेवा अने प्रधान तरीक्नो अभिकार पहेवानी भाइक गोताना लाथमां सोंपवामां आनपे ओया उल्लासा भाविथी आकृपित्वा उल्य अंधुओ गोताना विशाल कुरुण्नो अने चर्च आसगामां वध मातृभूमिना पथे वस्या. ए वेळा तेमने जेम गोताना माहरेतननो वर्ण पक्षी निरामवाना छाड इता तेम वंशनी प्रतिष्ठा जगावी मानपुरस्सर पुनः हीडाम थवाना ओंकी अलिकापा हती. लांझा काणना परहेश वसवाठनो आ रीते अंत आववाथी तेमनो आनंद समातो न होतो. गोताना स्नेहीजन वच्ये पाण्डा इरवाथी थनादा आनंदनां तेओ सोंधुल, सेवी रखां हतां. तेओाना हृदयमां आ रीते गोताना तरह स्नेहभाव दर्शावनार अने गोतानु भलुं करनार राज्यी ग्रति आलारनी लागएहीओ सागरना मौजन सभी उल्लगा रही हती ! अनुभवीयेनां ए वचन साचुं ज छ क 'पितारी इधने हेणे छ, पाण्डा ओंगवा गाननामु हाथगा रहेली ओंगने हेणी शक्ती नभी.'

[२]

जैनधर्मी वीरोनां पराक्रम

[७]

राज्यभटपटना वायरा नेमणु जेया नथी, हेशी राजवीजेना पलटाता स्वभावोनी जेमने परीक्षा नथी ऐवा आ भोगा लवा नवयुवानोने स्वप्ने पशु ऐवो ध्याल क्यांची होय के तेमनी सांचे आ रीते करवा पूर्वक प्रपञ्च रमाई रह्वो छे! अहप काळमां ज अपायेवा वयनोनी दिंभत डोडीनी छे! अने राजवीना डावभाव ऐकाह कुशण नटना वंपमहामां घरिणुमवाना छे! तेजो स्वेशमां युझ भोगवा सारु के वीसरायेल सोङ्गीजीवने ज्ञासिंघन कर्वा सारु खाचा नथी दरतां पशु केया थमराननु लक्ष्य अनांगा सारु याचा इरे के ऐवा रांडा पशु तेमने क्यांची जन्मे? सुरसिंगे जगा गिजाववामां संपूर्णपांच चतुराई वापरी हती. गोतानो मलिन हेतु जरा पशु प्रगट थवा दीधा न होता. प्रथम पशु अंगुष्ठ गोताना चातु व्हिवानो होहा परथी असेहवातुं भयुं अने पशु जे अविकार अचावावतना वंशजने सोंपवानी जन्हेरात करा. आम भीकानेर वासी जनताना अंतरमां गोताना शुद्ध आशयनी सुंहर छाप ऐसाही.

दशमियान भाग्यांद अने लक्ष्मीचंद गोताना रसाला सांचे मातृभूमिनी भाजाले आवी पहेंच्या. राजवी तरक्की तेमना हरजाने छांचे तेवुं स्वागत करवामां आव्युं. जनसमूहमां ऐती सचोट छाप ऐही. कर्मचंद मंत्रीना समयमां अनेक अनाव आ रीते विस्मृतिनो विषय अन्यो. मात्र जनता ज नहि पशु शुद्ध मंत्रीअवरना वारसोने घडीअर लाग्युं के पिताशीनी हड अस्थाने हती.

पशु ऐमनो आ अम उद्धाडे पडतां विकांच न थेचो. जेमे तेट्लो हेखाव करवा छतां डिन्नांगोरी छुपी रही शक्ती नथी. सुवर्णु अने पिताग वस्ये अले वर्लुनी समानता होय, अतां ज्यां क्सोटीजे अदावाय के तरत ज उल्लय वस्ये रहेती लिन्नता शुक्षी पडे छे.

सालुआमां साप पडायो छे अने हवे छरकवाती ऐक पशु आरी उद्धाडी नथी रही ऐ ज्येतां ज भीकानेर नरेशे पोत प्रकाश्यु. अने पिताने आपेक डाळ पूर्णु करवा कमर कसी. मांड ऐ मलिना युभमां व्यतीत थया त्यां तो ऐक सवारे डोडतां ज अचावावत वंशना आ अंतिम वारसोने अपर पडी के राजता भोडा वयनती आकर्षी, मृत्युपथारी ऐथा भार मुक्ती कडाडेल पिताना जे अंतिम उद्दगार प्रति हुर्क्क्य दाखव्युं हुतुं, ते साचा पडता हता. ऐट्ले के ऐ राजता नणु हमर सैनिकाथी गोतानो आवास वेचयेलो दृष्टिगोचर थेचो. टांड महाशयना शम्भोमां कडीजे तो—

Now truth dawned on them in all its terrible reality. They instinctively realised the situation and preferred a glorious death to an ignominious surrender.

आ ज्येतां ज तेमनी आंभ परना पद्दा हडी गया, पिताशीनी दीर्घ दृष्टिने ध्याल आग्यो. पशु आग लागी चुक्ती हती ऐट्ले हवे फूवो ज्ञाहवानो थत निरर्थक हतो. हूऱ्य ढेणाई गया पडी ऐ पर विचारणा करवी जेम नकामी गण्याय तेम थयेल भूल पर हवे विमर्श—परामर्श करवा ऐसवुं ऐ झोगट हुतुं. काणा ने डंसोला नागनी चूडमां तेजो अरायर कृत्ताम गया हता. तरत ज तेजोज्ञे निर्धार कडी लीम्या अने वीरोना भोते भरवानो जांपंडव योग वधावी लीम्या. गोताना राजपूत अंगरक्षकाना नाना समूहने लध तेजो सामनो करवा खडा थया. जे के संभ्यामां तो डेवण पांचसो ज हता छतां दृष्टेना

[७२]

श्री जैन सत्य प्रकाश

१५८

अहेतु उपर मरणयोगे जगं ऐववानी अने ए रीते अपीजवानी अडगवति ऊळी रुदी हती. अच्छावत अंधुओ अने तेमना अंगरक्षका राजना सैनिका सामे अहादुर्बुर्दक झुज्या; पण वेणु उग्रनरना विशाल समुद्रायमां तेमनुं प्रभाषु शी गणुनामां लेखाय! अच्छावतोने अंधारामां राखीने ओकांगेक आ जातेनो वेश धालवामां आव्यो हतो. अलीं समोविद्याना समरांगण जेवुं हतुं ज नहीं. ज्यारे मुक्ति मेणववानी सर्व आथा अदृश थर्ष त्यारे ओसवाल वंशना आ नीर नवीदाओंगे सलडुडुंग अपी जवानो निधार कर्यो. तेव्हांगे भयंकर छतां पुरातन कापना 'ज्ञेहार'नो मार्ग लीवो. मकानना एक चोगानमां चिता अडवामां आवो. पुण्योंगे पोतपोताना नारीवर्ग तेमज आण अच्याओनी छेल्ली विद्य लीधी! खींगा, आणंगा अने भरहोमां जेव्हा वृक्ष के अशक्त हता अमांना केटलांक तखवारथी गोतानी श्रवाहोरी कापी नांझी, ज्यारे घणा गणता आगमां फुटी पडयां! लोहीनी सरिता वडी रडी! भिरुतानी लाय ओकाहना मुजमांगी पणु न संबलाई! जे कंध किमती अने प्राचीन काणनी स्मृतिद्यु असमाप्त हतो ते ओक रूवामां नांझी हेवामां आव्यो! (आजे पणु ए स्थगानी मुक्ताकात लेनाऱ्हने ए फुंवी अतारामां आवे छ.) आधीना इरतीयरने तोडी झाडी नक्सुं अनावी हेवामां आव्यु. आ रीते संसार जन्य अंवनोथी मूक्त अनी उल्य अंधुओंगे गृहमंहिरमां आंवेत श्री अस्तिंत हेवनी केशरथी पूजन करी तेमज स्तुति करी. छेल्ली वार माटे परपर लेटी लीधु. त्यार पकी गोताना पोशाक पर डेसरना भांटण्या करी, दाथमां तखवार लध उल्य अहार पडया. हेवेलीना हरवान उघाडा मूळी दीधा. तेव्हा शरवीरता पूर्वक लुचनना अंत मुळी झुज्या अने वारेचित मृत्युने वर्या. एक तरफ राजनीगे पिताना डाळने पाणवासारु अच्छावत वंशने जडमूळथी उजेडी नांझवानो निश्चय कर्यो हतो अने अम करवामां सुरसिंगे नहेतो नेयो न्याय के अन्याय! अथवा तो नहेतां गेळ्यां गोते आगेदां वयसो! सैनिकाने ए वंशनुं ओकाह आणक पणु उवतुं रङ्गवा न पामे गेवी सम्भत आज्ञा आपी हती. भीज बाजु आ वीरबंधुओंगे पणु अतमानी अमरता पितानी लध, एक उसिलानृपना लाथमां अच्छावत वंशनुं ओकाह आणक पणु शरण्यागत तरीक जवा न पामे तेवी तंकेहारी राखी हती.

आम छतां कुहरतने ए वंश लुप्त थाय ए मंजुर न हेवाथी कंध त्रीजुं ज अन्यु. ज्यारे आ करपीण अनाव बन्यो. त्यारे ए वंशनी एक खी गोताना पिताने त्यां किसनगढमां सुवावडे गर्छ हती. अती दुक्षिणे एक पुत्ररत्ननो जन्म थेय. आ रीते अच्छावत वंश गोतातुं अस्तित्व टकारी रह्यो अने जगत सन्मुख अमर गाथा गाई रह्यो.

आम अच्छावतोनी यडती पडतीनो छेल्ले पडहो पडयो. आ संघंधमां जे कंध अतिशयोक्ता जेवुं लोय तेने बाजु पर मूळी मात्र मुहानी वातनो विचार करीगे तो पण एटलुं तो सहज पुरवार थाय तेम छे के जेनो अलिंसाना उपासक लेवा छतां मात्र नमाला जेवुं उवन गणता नहेता. जडर पडये गोतानी टेक माटे तेमज शरष्ट्र माटे प्राणु पणु पाथरी गन्धुता हता.

(चाल)

આભાર અને વિનંતી

શ્રી પર્વિષુ પર્વ પ્રસંગે અમે કરેલ વિનંતીથી અમને જે મહા મળી હતી તે અમે ગયા અંકમાં પ્રગટ કરી હતી. તે પણી અમને જુદા જુદા સંઘે કે સદ્ગુરુન્નથો તરફથી નીચે મુજબ વહુ મહા મળી છે.

પૂ. મુનિમહારાજ શ્રી દર્શનવિજ્યજી આહિના સદ્ગુરેશથી મળેલ મહા.

૫૧) શેડ રતદાલ વર્ષમાન શાહ વઠવાળુ કેમ્પ. (પાંચ વર્ષ માટે)

૫૨) શેડ ગ્રાંયકલાલ છગનદાલ

"

૫૩) શેડ જ્યંતિલાલ મગનદાલ

"

૫૪) પૂ. પ. મ. શ્રી. કર્તીમુનિજીના સદ્ગુરેશથી જૈન જ્ઞાનશાળા, વેરાવળ (આમના તરફથી ગયા વર્ષે ૨૧) અને ચાતુ વર્ષે (૩૦) મળી કુલ ૫૨) આબ્યા છે.)

૫૫) પૂ. પ. મ. શ્રી ધર્મવિજ્યજી ગણ્યિના સદ્ગુરેશથી શેડ આણુંદુ કલ્યાણુંની પેરી, વઠવાળ શહેર.

૨૫) પૂ. આ. મ. શ્રી. વિજ્યગંભીરસુરિજીના સદ્ગુરેશથી જૈન શ્વે. સંધ, મંહસાર.

૨૬) પૂ. આ. મ. શ્રી. વિજ્યકસ્તુરસુરિજીના સદ્ગુરેશથી જૈન સંધ, પાલનપુર.

૨૭) પૂ. સુ. મ. શ્રી. પ્રસાદંદજીના સદ્ગુરેશથી શેડ દલસુખભાઈ ખુશાલચંદ જવેરી, પાલનપુર.

૨૮) પૂ. આ. મ. શ્રી. વિજ્યલલિતસુરિજીના સદ્ગુરેશથી વીસા શ્રીમાળી એ નાત તરફથી, માણસા.

૨૯) પૂ. સુ. મ. શ્રી. હેમન્દસાગરજીના સદ્ગુરેશથી જૈન સંધ, વીસનગર.

૩૦) પૂ. સુ. મ. શ્રી. મંગળવિજ્યજીના સદ્ગુરેશથી જૈન સંધ, લુણાવાડા.

૩૧) પૂ. સુ. મ. શ્રી. હેમન્દવિજ્યજીના સદ્ગુરેશથી જૈન સંધ, મૈસાણુ.

૩૨) પૂ. પ. મ. શ્રી. દિમતવિજ્યજીના સદ્ગુરેશથી ઓસવાલ જૈન પંચ, વાણેરાવ.

આ રીતે મુનિસમેવનના ડરાવને અનુલક્ષિને આ પૂજારોએ સમિતિ માટે સદ્ગુરેશ આપવાની જે દૃપા કરી છે તે માટે અમે તે પૂજારોનો આભાર માનીએ છીએ. સમિતિ સમસ્ત શ્રી સંધની છે, અને હિવસે હિવસે સમિતિ પ્રત્યેનો પ્રેમ અને સહકાર વધતો જન્મ છે તેથી અમને હર્ષ થાય છે.

સમિતિને સાધાયતા આપનાર તે તે સદ્ગુરુન્નથો અને સંઘેના અમે જીણું છીએ.

અન્ય ગામના સંઘે અને સદ્ગુરુન્નથો પણ અવસરે સમિતિને અવશ્ય સાધાયતા મેાંકલશે એની અમે આશા રાખીએ છીએ. અને ચુતમાં પૂર્ણ થતાં શેષકાળમાં વિહાર દરમાન સમિતિ માટે ઉપદેશ આપવાની અમે સર્વ પૂજ્ય મુનિવર્યેને વિનંતી કરીએ છીએ.

૦૪૮૮૩૪૮૫૬.

સૂચના

આ અંકની જેમ આવતો અંક પણ વખતસર ૧૫મી તારીખે પ્રગટ કરવાની ઈચ્છા છે. છતાં અત્યારના અનિશ્ચિત સંઘેણોના કારણે અંક પ્રગટ કરવામાં વિલંબ થાય તો તે ચલાવી લેવા અને પત્ર લખીને તપાસ નહીં કરવા વાયરેને વિનંતિ છે.

૦૪૦

દરેક વસ્તુવા ચોણ્ય

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશના ત્રણ વિશેષાંકો

[૧] શ્રી મહાવીર નિર્ધાર વિશેષાંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામીના જીવન સંગ્રહી અનેક લેખાથી
સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય છ આના (ટપાદાખર્ચનો એક આનો વધુ).

[૨] શ્રી પર્યુષણ પર્વ વિશેષાંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામી પઢીના ૧૦૦૦ વર્ષના નૈન ધર્તિ-
લાસને લગતા લેખાથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય એક રૂપિયા.

[૩] દીપોત્સવી અંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામી પઢીના ૧૦૦૦ વર્ષ પઢીના
સાતસો વર્ષના નૈન ધર્તિલાસને લગતા લેખાથી સમૃદ્ધ
સચિત્ર અંક : મૂલ્ય સવા રૂપિયા.

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશના એ વિશિષ્ટ અંકો

[૧] કેમાંક ૪૩-નૈનહર્ષનમાં માંસાહાર હોવાના આક્ષેપોના
જવાબદ્ય લેખાથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય ચાર આના.

[૨] કેમાંક ૪૫-ક. સ. શ્રી. હેમયંડાચાર્યના જીવન સંગ્રહી
અનેક લેખાથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય ત્રણ આના.

—ક્ષેપાઃ—

શ્રી જૈનર્ધમ સત્યપ્રકાશ સમિતિ
નેરિંગભાઈની વાડી, ધીકાંદા, અમદાવાદ.